हंसा

सरल, शुद्ध एवं नवीन

नूतन गद्य संकलन

कुंजी

कक्षा XI

मूल्य 5.00

हंसा पब्लिकेशन्स

अज..., अजमेर

सरल-शुद्ध प्रमाणिक कुंजी

नूतन गद्य संकलन

(कक्षा XI की विशेष हिन्दी की पाठ्यपुस्तक)

संपादक :

गणपति चन्द्र भंडारी

डॉ. राधा चरण सारस्वत

लेखक :

राम शर्मा

हंसा पब्लिकेशन्स

पुरानी मण्डी, अजमेर

विषय-सूची

1. चलते हुए घर

—भीमसेन त्यागी

5 का सारांश—

प्रस्तुत रिपोर्ताज राजस्थान के गाड़िया लुहारों से सम्बन्धित है। गाड़िया ...हारों के जीवन स्तर एवं सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थितियों की संवेदनापूर्ण ...त्रात्मक एवं यथार्थ अभिव्यंजना है।

नेकीराम से लेखक की मुलाकात—सर्व प्रथम लेखक नेकीराम से ही ...लता है। नेकीराम ने बताया कि लुहारों की पूरी दुनिया ही उनकी गाड़ी ...होती है। उसी में जीना-मरना, शादी-ब्याह, तीज-त्योहार सम्पन्न होते ...। घर-गृहस्थी का सारा सामान उसी में होता है।

रज्जूड़ी से बात चीत—रज्जूड़ी ने लेखक को बताया की उनकी ...ाड़ी में ही सारा सामान, रुपये-पैसे तक रहता है। उसने एक युवक का ...ो जिक्र किया जिसने उसकी फोटो खींची थी तथा जिसने उनकी बोली ...ो कापी में रिकार्ड किया था और फिर आने का वायदा कर चला गया ...ा।

उनके घुमक्कड़ जीवन का कारण—नेकीराम ने बताया कि वे लोग ...रों में नहीं रहते। वे महाराणा प्रताप के क्षत्रिय सैनिक है। प्रताप के ...ारा चित्तौड़ हार जाने पर उन्होंने चित्तौड़ को सदा के लिए छोड़ दिया ...ौर आन की कि जब तक चित्तौड़ आजाद न होगा वे घास पर सोयेंगे, ...ीपक नहीं जलायेंगे, कुए से पानी नहीं खींचेंगे, तथा टोपी नहीं पहनेंगे। ...वतन्त्रता प्राप्ति के बाद पण्डित नेहरू ने इनकी इस आन को तुड़वाया।

इनकी गाड़ी—यह एक लम्बूतरे ताबूत की शक्ल की होती है। इस पर ...ीतल के पतरे और मेखें जड़कर डिजाइन बनाई जाती है। पहिये रथों के ...हियों से भारी होते हैं। यही उनका घर होता है।

इनका काम—ये लोग लोहे के फावड़े, कुल्हाड़े आदि बनाते हैं। ...न्हें भगवान से वरदान मिला हुआ है कि इन्हें लोहे के काम में कोई मात ...हीं दे सकता और न ही इनकी भट्टी की आग से, आग लग सकती है।

भगतजी से बातचीत—भगतजी ने बताया कि नेहरूजी उन्हें ि ले गये थे और किले पर झण्डा फहरवाया था। उन्होंने कहा कि आजाद हैं। उन्होंने उनको जमीन देने का वादा किया था। उनके स ने कहा कि जो जहाँ है वहीं उन्हें बसा दिया जाय। राजस्थान में यह पूरा हुआ है पर बाकी जगह नहीं। शास्त्रीजी और इन्दिराजी ने भी किये हैं पर पूरे नहीं हुए। उन्होंने बताया कि उनके बच्चे पढ़ने लगे वे बच्चों को अपना पैतृक धन्धा ही करवाना चाहेंगे।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. निम्नलिखित देशज शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

उत्तर—

देशज शब्द	शुद्ध रूप
मांणस	मनुष्य
संगार	शृंगार
छत्री	क्षत्री
पंडत	पण्डित
बखत	वक्त
सास्तरी	शास्त्री
परतिग्या	प्रतिज्ञा
सोभा	शोभा

2. पाठ में प्रस्तुत चार अनुकरणात्मक शब्द-युग्मों का उल्लेख कीजिए

उत्तर—चुल-बुलाहट, शोर-शराबे, तीज-त्यौहार, शादि-ब्याह।

3. 'चलते हुए घर' शीर्षक की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।

उत्तर - किसी भी रचना का शीर्षक वैसा ही होता है जैसा कि दुकान का साइन बोर्ड। साइन बोर्ड उस दुकान की वस्तुओं का स होता है। उसी तरह रचना का शीर्षक भी। शीर्षक से यह संकेत जाता है कि यह रचना किसके बारे में है। 'चलते हुए घर' भी पा विषय वस्तु का संकेत करता है। अतः शीर्षक प्रतीकात्मक है प गाड़िया लुहारों के जीवन की एक झलक दिखाई गई है। उनका घर गाड़ी है जिसमें बैठ वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम-धन्धे की में विचरण करते रहते हैं। लुहारों के जीवन स्तर एवं सांस्कृतिक, अ

परिस्थितियों का इस पाठ में सजीव वर्णन हुआ है। शीर्षक इसका प्रतीक है। अतः हम कह सकते हैं कि शीर्षक उपयुक्त एवं सार्थक है।

4. मेवाड़ छोड़ते समय गाड़िया लुहारों के पूर्वजों के द्वारा की गई प्रतिज्ञा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर – मेवाड़ छोड़ते समय गाड़िया लुहारों के पुरखों ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक अपने चित्तौड़ को आजाद नहीं करा लेंगे तब तक घर नहीं बनायेंगे, घास के बिस्तर पर सोयेंगे, टोपी नहीं पहनेंगे, चिराग नहीं जलायेंगे, कुए से पानी नहीं भरेंगे और हुक्के की नेह लम्बी नहीं रखेंगे।

5. पंडित नेहरू ने गाड़िया लुहारों की आन कैसे तुड़वाई ?

उत्तर—नेहरूजी 700 लुहारों को लेकर चित्तौड़ के किले पर गये उन्होंने उनके सरदार के हाथ से किले पर झण्डा फहरवाया। झण्डा फहर–वाने के बाद पण्डितजी ने कहा था कि अब वे आजाद हैं। अब उन्हें गाँव-गांव भटकने की जरूरत नहीं है। घर बनाकर वे आराम से रह सकते हैं। इस तरह उन्होंने लुहारों की आन को तुड़वाया।

6. गाड़िया लुहारों ने राजस्थान में जमीन क्यों नहीं ली।

उत्तर—गाड़िया लुहारों ने सिवाय उनके जो पहले से ही राजस्थान में थे, वहां जमीन नहीं ली क्योंकि वहां पानी का इन्तजाम तो है नहीं। हर साल अकाल पड़ता है। जो लोग वहां रह रहे हैं उन्हीं का गुजारा मुश्किल से होता है। यदि वे भी वहां बस जाते तो सब भूखे मरने लगते।

7. गाड़िया लुहारों ने पण्डित नेहरू से क्या माँग की ?

उत्तर—गाड़िया–लुहारों ने पण्डितजी से माँग की कि उन लोगों में से जो जहाँ रह रहे थे, उन्हें वहीं जमीन दे दी जाए।

8. भगतजी पढ़ाई के बाद अपने बच्चों से क्या कार्य करने की अपेक्षा करते थे ?

उत्तर—भगतजी चाहते थे कि पढ़-लिखकर भी उनके बच्चे अपना पैतृक काम ही करें। वे नौकरी को गुलामी मानते हैं और गुलामी दे नहीं सकते। अतः वे स्वतन्त्र धन्धा ही करें।

9. 'भट्टी की आग भट्टी में रहेगी' से सम्बन्धित दन्तकथा का कीजिए।

उत्तर—'भट्टी की आग भट्टी में रहेगी' इस सम्बन्ध में नि
दन्तकथा प्रचलित है—

जब राणा प्रताप लड़ाई में हार गये तो गाड़िया लुहारों के
चित्तौड़ छोड़ कर चले। रास्ते में उन्हें भगवान मिले। उनके रथ
टूट गई थी। इसलिए आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। उनके पुरखों ने उन
की धुरी जोड़ दी थी। भगवान ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि
काम में वे कभी मात नहीं खायेंगे। उनकी भट्टी से उठकर कभी आ
लगेगी। यही कारण है कि आग उनकी भट्टी से उड़कर किसी के
खेत-खलिहान में लग नहीं सकती। भट्टी की आग भट्टी में ही रहती

10. 'चलते हुए घर' रिपोर्ताज को लिखने का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर—इस रिपोर्ताज को लिखने में लेखक का मूल उद्देश्य यह
पाठक गाड़िया लुहारों के जीवन से परिचित हों। वे जान सकें कि
क्यों गाड़ियों में ही अपनी दुनिया बसाये हुए हैं। उनका आर्थिक
सामाजिक जीवन कैसा है ? उनकी क्या संस्कृति है ? इत्यादि बात
जानकारी देना तथा उनके मान-मर्यादा मय जीवन की झांकी
करना इस पाठ का उद्देश्य है।

11. "श्रम की कोख से संगीत जन्म लेने लगता है" का आशय
कीजिए।

उत्तर—इसका आशय यह है कि लुहारों के घनों से एक लयात्मक
का स्वर सुनाई देने लगता है। उनके घन एक लय से लोहे पर चोट
हैं। उनमें से निकलने वाली स्वर लहरी संगीत से कम नहीं होती। यह
गाड़िया लुहारों के श्रम का स्वर है इससे प्रमाणित होता है कि श्रम
एक संगीत है ?

12, नेकीराम ने मेवाड़ की हार का जो कारण बताया, उसका
करते हुए अपनी सहमति अथवा असहमति सकारण प्रकट कीजिए।

उत्तर—नेकीराम ने मेवाड़ की हार का कारण यह बताया कि
मन्दिर में एक पुतली थी जो बोलती थी। वह लड़ाई का सारा हाल
दिया करती थी। दुश्मन कब, किधर से हमला करेगा, उन्हें क्या क
आदि बातें वह बता दिया करती थी। दुश्मन को इसका पता लग

किसी के बताने पर उन्होंने गाय को मार कर उसका माँस पुतली के मुँह में भर दिया । पुतली ने बोलना बन्द कर दिया और वे लड़ाई में हार गये ।

यह एक किंवदन्ती है । इस पर विश्वास करना उचित प्रतीत नहीं होता । हार का और कोई कारण हो सकता है । मानव अपनी कमजोरियों के लिए ऐसा ही कोई दैविक कारण गढ़ लेते हैं जिससे उनके मन को तसल्ली मिल जाती है । अन्यथा समस्त हारों का बोझ मानव को तोड़ देता है ।

13. पाठ के आधार पर रज्जूड़ी की मनोदशा का वर्णन कीजिए ।

उत्तर—रज्जूड़ी के मन के किसी कोने में फोटू वाले बाबू के प्रति कोमल भावना थी । उसका जिक्र आते ही वह एकदम उदास हो गई थी । उसको शिकायत है कि तब वह उनके बीच बड़ी-बड़ी बातें करता था ; पर अब वह उन्हें एकदम भूल गया था । लेखक के आते समय भी उसके मन में एक ही सवाल था कि वह फिर कब आयेगा । इसकी अभिव्यक्ति 'फिर कब आओगे, बाबू !' प्रश्न में हुई थी । उसे लगा था कि फोटू वाला बाबू उसे धोखा दे गया है । उसके कोमल मन को ठेस लगी थी ।

14. अपने क्षेत्र के सामाजिक जीवन को रिपोर्ताज की शैली में लगभग 250 शब्दों में स्वनुभव के आधार पर प्रस्तुत कीजिये ।

उत्तर—शहर के धूल-धुएँ और शोर-शराबे से घिरी घनी बस्ती—राबड़िया । राष्ट्रीय मार्ग की बाईं ओर जहाँ जमीन कुछ नीची हो गई है वहां कच्ची झोंपड़ियों की एक घनी बस्ती है । इनमे रहते हैं वे लोग जो शहर में छोटी-मोटी मजदूरी करते हैं । सीताराम कहता है—'हम इन झोंपड़ियों में कई वर्षों से रहते आ रहे हैं ।" झोंपड़ियां छोटी-छोटी हैं पर उनमें रहने वाले लोगों की संख्या उनके विस्तार से अधिक । एक-एक झोंपड़ी में पाँच-पाँच, सात-सात लोग रहते हैं । इन्हीं में शादी-ब्याह, जन्म-मरण सब होता है । यह ही उनकी रसोई, शयन-कक्ष और सब कुछ है ।

झोंपड़ियाँ कच्ची हैं । घास-फूस के छप्पर से आच्छादित । फर्श भी कच्चा है किवाड़ों के नाम पर कई छोटे-छोटे टीन के टुकड़ों से जुड़ा किवाड़ नुमा कोई चीज ।

"सन् 1975 की बाढ़ में, बाबूजी, हमारी सब झोंपड़िया बह ग[illegible] सीताराम ने कहा । उसने फिर कहा—"हर वर्षा में हमारी झोंपड़ि

से भर जाती है। जमीन नीची होने के कारण यहां वर्षा में पानी भ
है और फिर कई दिनों तक कीचड़ में ही रहना पड़ता है।"

मैंने पूछा—"आप लोग दूसरी जगह क्यों नहीं चले जाते ?"

वह बोला – " कहाँ जाएँ ? शहर से दूर जाने पर मजदूरी क
आयेंगे ? सरकार ने हमें शहर से बाहर जमीन दी है पर हम ज
चाहते। हमने सरकार से माँग की है कि हमें यहीं पक्के मकान ब
प्रति वर्ष हमें आश्वासन भी मिलता है पर वादा अभी तक पूरा नहीं
रहा है। कभी तो हमारी इच्छा पूरी होगी ही।"

इतने में आकाश में बादल घिर आये थे। सीताराम ने कहा-"
अब आप चले जावें। बरसात आ गई तो आप यहां फंस के रह जा

मैंने सीताराम से विदा ली और फिर चला आया।

---

2. कच्चे धागे

–उषा प्रिय

पाठ का सारांश–

कुन्तल निम्न मध्यम परिवार की सुन्दर युवती है। पड़ोसिन
के यहां यदा-कदा आकर उसकी मदद करती रहती है। जीजी सम्पन्न
से है। पति बिजनेस करते हैं पर कोई सन्तान नहीं है।

आज उसका भाई उनके यहाँ रहकर कलक्टरी की परीक्षा देने
को आ रहा है। उसी के स्वागत की तैयारी हो रही है। जीजी उस
करती है। कुन्तल की भी वह तारीफ करती है। कुन्तल मन ही म
के भाई के सम्बन्ध में मधुर स्वप्न संजोने लगती है। वह उसके आने
छिपे उसे देख लेती है।

कुन्तल के पिता गजाधर बाबू की सलाह से जीजी के पति राजकु
से उसके विवाह की बात करते हैं, पर कहां वे और कहां उमाचरण
उन्हें मीठा सा इन्कार मिल जाता है और बेचारी कुन्तल का स्व
ढह जाता है, उसके स्वप्नों के कच्चे धागे टूट जाते हैं

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी रूप लिखिए—

उत्तर— इन्तजार = प्रतीक्षा
इम्तहान = परीक्षा
बिजनेस = व्यापार
फर्स्ट = प्रथम
हुज्जत = व्यर्थ का विवाद

2. निम्नलिखित शब्दों में कौनसा शब्द 'इन' प्रत्यय के योग से नहीं बना है?
(क) मनिहारिन (ख) पड़ौसिन (ग) पंडिन (घ) मलिन (च) नलिन
उत्तर – (घ) मलिन

3. समास-विग्रह करके समास का नाम बताइए –
उत्तर—

पद	विग्रह	समास
सतरंगा	सात रंगों वाला	कर्मधारय
इन्द्रधनुष	इन्द्र का धनुष	सम्बन्ध तत्पुरुष
राजरानी	राज की रानी	,, ,,
संतानहीन	संतान से हीन	अपादान तत्पुरुष
चारपाई	चार पायों वाली अर्थात् खटिया	द्विगु एवं बहुव्रीहि
इधर-उधर	इधर और उधर	द्वन्द्व

4. प्रतिध्वनित शब्द — समानार्थी सहचर शब्द
1. खट-खट — खिला-पिलाकर
2. सरसराहट — आध-आध
नाक-नक्श

5. "क्या बात करती हो मनिहारिन ? तुम्हारे पैसे कब रोके गये हैं ? लाओ पहनाओ।" कुन्तल के कथन में अभिव्यंजित भाव है –
(क) अवज्ञा (ख) उपालम्भ (ग) झुंझलाहट
(घ) खीज (च) क्रोध
उत्तर—(च) क्रोध

6. "मैं तो पहले ही जानता था।" कथन में अभिव्यंजित भाव है—
(क) असंतोष (ख) क्रोध (ग) कड़वाहट
(घ) खीज (च) उपालम्भ
उत्तर— (ख) क्रोध

7. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर तीस शब्दों में दीजिए—

(1) कुन्तल ने मुस्करा आये ओंठ क्यों दबा दिये ?

उत्तर—जीजी द्वारा उसकी प्रशंसा सुनकर कुन्तल मुस्करा-सी उसने उसको छुपाने का प्रयास किया ताकि जीजी यह न समझ ले अपनी भावी सास व विवाह की कल्पना से मुस्करा दी हो।

(2) कुन्तल ने बच्चों को छत पर शोर मचाने से क्यों रोका ?

उत्तर—वह जान गई थी की जीजी के भाई अध्ययन हेतु यहां हैं। उनके लिए ऊपर का कमरा ही ठीक किया गया था। अतः ब अपने शोर-गुल से उन्हें पढ़ने न दे। इसीलिए उसने उन्हें मना किया

(3) सिद्धार्थ के आने की बात सोचकर कुन्तल विचित्र-सी उत्कण्ठा भर उठी ?

उत्तर—कुन्तल ने सोचा कहीं सिद्धार्थ से ही उसका सम्बन्ध हो जाये। जीजा की वह मदद करती ही थी। वह उसकी प्रशंसा भ करती थी। उसने सोचा जीजी तो उसके पक्ष में है ही। अतः वे अपनी भाभी बनने में मदद करेगी।

(4) शीशे में झुककर अनजानी उत्सुकता से कुन्तल क्यों देख रही थी

उत्तर—उसके मन में कहीं भाव छिपा था कि वह सिद्धार्थ के या नहीं। अपने घर की स्थिति के देखते ऐसा सम्भव न हो प सुन्दरता का उसे विश्वास था। शीशे में अपने रूप को देखकर उसने होगा कि अपने सौन्दर्य के बल पर वह सिद्धार्थ को आकर्षित कर स

8. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए—

(1) "कुन्तल को कभी-कभी सिद्धार्थ की एक झलक मिल जाती थी कि आंगन में इन्द्रधनुष निकल आया है।"

उत्तर—कुन्तल सिद्धार्थ को देखकर वैसे ही प्रसन्न हो उठती इन्द्रधनुष को देखकर हम प्रसन्न हो उठते हैं।

(2) "कुन्तल सांस साधकर रह गई। कुछ तीखा पैना-सा दि धंसता चला गया।

उत्तर—कुन्तल ने अपनी आर्थिक स्थिति की तुलना सिद्धार्थ उसे लगा कि कहीं उसके स्वप्न, स्वप्न ही न रह जायें। यह सोचकर दुखित हो उठी।

9. निम्नलिखित कथनों में व्यक्त गजाधर और उमाशंकर की विचारधारा और मान्यता को स्पष्ट करिए—

(1) उमाशंकर ने कहा, "क्या बात करते हो, गजाधर ? कहाँ राजा भोज, कहाँ—अरे, हमारी वहाँ पहुंच हो सकती है.......। तुम पहुंचे भी कहाँ।"

उत्तर—उमाशंकर ने अपने को बहुत छोटा व्यक्ति माना है। उस जैसे साधारण व्यक्ति की लड़की का सम्बन्ध राजकृष्ण बाबू जैसे बड़े आदमी के साले से होना कैसे सम्भव होगा।

(2) गजाधर ने माथे पर बल लगाकर कहा, "बस हार गए, भई, बेबी की तकदीर भी तो है, क्या मालूम राजरानी ही होना लिखा हो, कौन जानता है ?

उत्तर—गजाधर विवाह सम्बन्ध मे भाग्य को बलशाली मानते हैं। शादि-विवाह में तकदीर का बड़ा हाथ होता है। उनका मान्यता है कि यदि भाग्य में हो तो छोटे घर की लड़की भी राजरानी बन सकती है यही कारण है कि वे उमाशंकर को कुन्तल के विवाह-सम्बन्ध हेतु कृष्ण बाबू जैसे बड़े आदमी से बात करने पर बल दे रहे हैं।

10. मनिहारिन को कुन्तल द्वारा चूड़ी पहनने की प्रक्रिया में हुए विस्मय के तीनों कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कुन्तल ने मनिहारिन को चूड़ी पहनाने के लिए कहा तो उसे विस्मय हुआ। इसके तीन निम्नांकित कारण थे–

प्रथम—तीज त्यौहारों पर लाख आवाजें देने पर भी कुन्तल चूड़ी नहीं पहनती थी और आज वह आगे होकर चूड़ी पहनाने को कह रही थी।

द्वितीय—आज वह मोटी चूड़ी न पहनकर महीन, मीने वाली कामदार चूड़ी पहनने की कह रही थी।

तृतीय – एक-एक हाथ में आध-आध दर्जन चूड़ियाँ पहनने के लिए वह मनिहारिन से कह रही थी।

11. कुन्तल के परिवार की दशा का उल्लेख करिए।

उत्तर--कुन्तल का परिवार एक साधारण निम्न मध्ययम वर्ग का परिवार था। उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। घर की चौखट टूटी हुई और दीमक

लगी हुई थीं। बरामदे की दिवारें मटमैली एवं बदरंग हो रही थीं
पर खपरैल का छप्पर था। नल खराब हो चुका था और निरन्
करता था।

12. यदि कुन्तल के स्थान पर आप होते तो इस सम्बन्ध के न हो
आपके मन में समाज और पड़ोसिन जीजी के विषय में किस
विचार उठते ? लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर—सम्बन्ध न होने पर मैं सोचता कि इस समाज में पै
कदर है। बड़े लोग रुपये पैसों से सम्बन्ध को आंकते हैं। उनके लि
की सुन्दरता एवं गुण कोई महत्त्वपूर्ण नहीं। उनके लिए दहेज में मि
राशि महत्त्वपूर्ण होती है। कुन्तल सुन्दर, सुशील एवं गुणवती हो
राजकृष्ण बाबू को स्वीकार नहीं, क्योंकि उसके पिता मोटा-सा द
सकते हैं।

दूसरी तरफ मैं सोचता कि पड़ोसिन जीजी भी कुन्तल को
उससे काम करवाती रहती है। वह बड़ी चतुर है। कहने को,
पाकर कोई सास धन्य होगी, कह देती है पर अपने भाई के सम्ब
सुनकर चुप कर जाती है। वह भी दहेज के पक्ष में है। जब वह
संतुष्ट है तो फिर क्यों नहीं उसका विवाह अपने भाई से करवा
कथनी और करनी में कितना अन्तर है।

13. इस पाठ के आधार पर लेखिका की शैलीगत विशेषताओं का
सहित 100 शब्दों में उल्लेख कीजिए—

उत्तर— उषा प्रियवंदा की शैली में निम्नांकित विशेषताएं द

(i) **भाषा की सरलता**—लेखिका की भाषा अत्यन्त सरल ए
इनकी भाषा में प्रसाद एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है। भाषा
सहज एवं स्वाभाविक है तथा पात्रानुकूल है। साधारण बोलचा
एक उदाहरण प्रस्तुत है-"भइया है मेरा, छोटा, आज शाम को आ

(ii) **उर्दू शब्दों का प्रयोग**—उषाजी की भाषा में उर्दू श
प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत कहानी में भी इम्तहान, हुज्जत, किस्मत
आदि शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है।

(iii) भाव प्रवणता:–उषाजी के शिल्प की विशेषताओं में भाव प्रवणता एवं अभिव्यक्ति की अभीष्ट क्षमता है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने कुन्तल की स्वप्निल मधुर कल्पनाओं का सहज चित्रण किया है।

(iv) मूर्त्त चित्रण––उषा प्रियवंदा की शैली में भावों के मूर्त्त रूप देने की अद्भुत क्षमता है। प्रस्तुत कहानी में एक निम्न मध्यवर्गीय अविवाहिता कुन्तल की कल्पनाओं एवं आकांक्षाओं की अतृप्ति का मूर्त्त चित्रांकन दर्शनीय है।

—

3. फिर से सोचने की आवश्यकता

--आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

पाठ का सारांश –

प्रस्तुत पाठ में द्विवेदी जी ने भारतीयों के अंग्रेजी-मोह पर करारा व्यंग्य किया है तथा स्वभाषा के विकास पर बल दिया है।

(1) दो वर्ग – लेखक के अनुसार उपयोगितावादी और आदर्शवादी दो मत वाले लोग होते हैं। पहले मत के लोग समझदार माने जाते हैं। वे भावुक नहीं होते। उनकी दृष्टि वस्तु की उपयोगिता और अनुपयोगिता को देखने में सक्षम होती है। दूसरे मत के लोग भावुक होते हैं। उनकी दृष्टि में मान का महत्त्व है।

(2) अंग्रेजी के प्रति मोह – पहले मत के लोग अंग्रेजी के पक्ष में हैं। वे इसे राष्ट्रभाषा मानते हैं और चाहते हैं कि इसे हटाया नहीं जाए। 150 वर्षों के लम्बे सम्पर्क ने इसे हमारा आवश्यक अंग बना दिया है। यह राज-काज, न्यायालय एवं पढ़े-लिखे लोगों की भाषा है। स्वभाषा इसका स्थान नहीं ले सकती। इसे हमारे देश में रहना चाहिए।

दूसरे मत वाले लोगों का मत है कि इसे यहाँ से चला जाना चाहिए।

(3) लेखक का मत––द्विवेदी जी का मानना है कि अंग्रेजी का कितना भी महत्त्व क्यों न रहा हो, यह अब स्वभाषा का स्थान नहीं ले सकती। यदि थोड़े से लोगों के लाभ के लिए स्वभाषा की उपेक्षा की गई तो देश

बडी हानि होगी । अब समय आ गया है जब हम इस प्रश्न पर पुन करें और स्वभाषाओं का विकास करें ।

अभ्यास के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि –विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का न बनाइये––

शब्द	सन्धि विच्छेद	नाम
न्यायाधीश	न्याय + अधीश	स्वर (दीर्घ) सन्धि
परमुखापेक्षिता	पर + मुख + अपेक्षिता	स्वर (दीर्घ) सन्धि
भावावेशी	भाव + आवेशी	स्वर (दीर्घ) सन्धि
अत्याचार	अति + आचार	स्वर (यण) सन्धि
अन्तर्यामी	अन्तः + यामी	विसर्ग सन्धि
तर्काभास	तर्क + आभास	स्वर (दीर्घ) सन्धि

2. समास विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए ---

पद	समास विग्रह	नाम
तत्वचिन्तक	तत्व का चिन्तक	तत्पुरुष
सत्संगति	सत् है जो संगति	कर्मधारय
खिचा-खिचा	खिचा – खिचा	अव्ययी भाव
लाज-हया	लाज और हया	द्वन्द्व

3. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए––

पुंजित–– सदियों से पुंजित ज्ञान-राशि का उपयोग कर हम धन्य सकते हैं ।

ताबेदार––150 वर्षों से भी अधिक समय तक भारत अंग्रेजी शासन ताबेदार रहा ।

परमुखापेक्षी – जो लोग स्वयं कुछ नहीं करते वे सदैव दूसरों पर निर्भ रहते हैं तथा परमुखापेक्षी हो जाते हैं ।

मनीषी - टैगोर जैसे मनीषी थोड़े ही है जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला

अचिंतनीय – अणु बम्ब की विनाशक शक्ति अचिंतनीय है ।

4. वह कौनसी बात है जिस कारण लेखक को राष्ट्र भाषा के प्रश्न पर फि से सोचने को विवश होना पड़ा ?

उत्तर --आज एक मत के लोग यह मान रहे है कि अंग्रेजी ही हमारा राष्ट्रभाषा है क्योंकि इसने 150 वर्षो तक राज किया है तथा यह पढ़े-लिखे लोगों की भाषा है। इसने ही हमारा विदेशों में सम्मान बढ़ाया है लोगों के प्रश्न पर फिर से सोचने को बाध्य किया है।

5. तथाकथित समझदारों की दृष्टि में हमारी धाक का कारण क्या है ?

(क) शक्ति (ख) ज्ञान (ग) शान्तिप्रियता

(घ) अंग्रेजी का ज्ञान (च) नेतृत्व उत्तर— (ग)

6. (क) दुनिया की दृष्टि में किस प्रकार के लोग 'समझदार' और किस प्रकार के लोग 'भावुक' माने जाते हैं ? जीवन के निम्नांकित क्षेत्रों में से किस में समझदार लोग अधिक मिलते हैं और किसमे भावुक ?

(i) प्रशासन (ii) न्यायालय (iii) साहित्य-सृजन (iv) अध्यात्म-साधना (v) अंकेक्षण (vi) अध्यापन (vii) कला-साधना (viii) सैनिक सेवा (ix) व्यापार (x) समाज सेवा।

दुनिया की दृष्टि में 'समझदार' वे हैं जो हर बात को उपयोगिता की दृष्टि से देखते हैं। इसके विपरित 'भावुक' वे हैं जो मान के लिए मर मिटना मनुष्यत्व की निशानी मानते हैं। प्रशासन, व्यापार, न्यायालय, अंकेक्षण आदि जीवन के क्षेत्रों में समझदार लोग मिलते हैं जबकि साहित्य-सृजन, कला-साधना, अध्यात्म साधना, समाज-सेवा एवं सैनिक सेवा में 'भावुक' लोगों की अधिकता होती है।

(ख) आप दोनों में से क्या होना पसन्द करते हैं और क्यों ? (लगभग 30 शब्दों में)

उत्तर मैं 'भावुक' होना पसन्द करूंगा क्योंकि भावुक होना ही सच्चा मानव होना है। वह मनुष्य ही क्या जो केवल प्रयोजन के लिए जीये। मेरी दृष्टि में प्रयोजन से अधिक मान का अधिक महत्व है।

7. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए —

(1) जलदानेन हि जलदः नहि जलदो पूजितो धमः।

उत्तर – जल देने पर ही बादल का महत्व है नहीं तो वह धूम-समूह है। किसी भी बात का महत्व उसकी उपयोगिता पर निर्भर करता है।

(2) सिर्फ इसलिये की वह हमारे पुराने शासकों की भाषा थी, अंग्रेजी को विदेशी नहीं कहा जा सकता।

उत्तर--अंग्रेजी का प्रचलन हमारे देश में 150 वर्षों से भी अधिक से रहा है तथा अब यह पढ़े-लिखे लोगों की एवं राज-काज की भाषा है अत: यह विदेशी नहीं रही। ऐसा कुछ लोग, जिन्हें लेखक ने 'सम कहा है, मानते हैं।

(3) शासन की मशीन केवल नारों पर नहीं चलती।

उत्तर--शासन नारों से, भावुकता से नहीं चलता। इसे चलाने के चाहिए समझदारी। इसे वे ही चला सकते हैं जो उपयोगिता और अनुपय में विभेद कर सकते हैं।

(4) सिर गिनने से देश का काम नहीं चल सकता, दिमाग गिनन

उत्तर—लेखक ने व्यंग्य से कहा है कि देशी भाषा जानने वाले सभी लोगों की गिनती सिर गिनने के समान है अर्थात् देशी भाषा जानने लोगों के पास दिमाग नहीं। दिमाग तो अंग्रेजी जानने वालों के पास है वे ही वस्तुत: शिक्षितों की गिनती में आते हैं।

(5) मनुष्य इसलिये मनुष्य है कि उसने सृष्टि की धारा को पुरुषार्थ से अनुकूल दिशा में मोड़ा है।

उत्तर--लेखक ने पुरुषार्थ को ही मनुष्यत्व का प्रमुख लक्षण माना वह मनुष्य भी इसी गुण के कारण है। अपने पुरुषार्थ के बल पर ही सृष्टि को अपने अनुकूल किया है।

8. यह विवाद का विषय है स्वय तैयार कर कक्षा में बोलें।

9. लेखक की रचना-शैली का विवेचन निम्नलिखित बिन्दुओं के आधा कीजिये।

उत्तर—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के उन क सृजकों में से हैं जिन्होंने इसकी श्री-वृद्धि में अपना मौलिक योगदान है। इनकी शैली इनके व्यक्तित्व का प्रतिरूप है। हम इनकी रचना शैल विवेचन संक्षेप में निम्नानुसार कर सकते हैं—

(i) सामयिक विषयों पर विचार—द्विवेदी जी ने साहित्यिक विषय साथ-साथ सम-सामयिक विषयों पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं। प्र निम्बन्ध इस बात का स्पष्ट प्रमाण है जिसमें उन्होंने राज-भाषा विषय अपने स्पष्ट विचार व्यक्त किये हैं तथा स्वभाषा को ही राज-भाषा की अपील की है।

(ii) *चिन्तन की गहराई*–द्विवेदीजी चिन्तक थे और सभी विषयों पर उन्होंने अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किये है। उनके विचार तर्कसंगत होते है। उन्होंने स्वभाषा के पक्ष को बड़े ही तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत किया है।

(iii) *तत्सम शब्दों का बाहुल्य*–द्विवेदीजी की भाषा में तत्सम शब्दों की भरमार रहती है पर इससे भाषा में जटिलता नहीं आने पाती। प्रस्तुत निबन्ध में प्रतिष्ठित, तिरस्कार, दक्ष, सिद्ध, लज्जा आदि अनेक ऐसे शब्दों का बाहुल्य है·

(iv) *अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग*–द्विवेदीजी की भाषा उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द भी अनायास आ जाते हैं। इस निबन्ध में कफन, दीवाने, फीसदी, वोट, फाइल आदि शब्दों का प्रयोग दृष्टव्य है।

(v) *उद्धरणों का सार्थक प्रयोग*–द्विवेदीजी के निबन्धों में उद्धरणों का बड़ा ही सार्थक प्रयोग हुआ है। बंगला, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं के उद्धरणों का प्रयोग हम इन लेखों में देख सकते हैं। इस निबन्ध में भी इन्होंने टैगोर के एक कथन को उद्धरित किया है। संस्कृत का भी एक उद्धरण 'जलदानेब हो जलद' सार्थक रूप से अपनी बात के समर्थन में लेखक द्वारा प्रयुक्त हुआ है।

4. मेरी मास्को यात्रा

–रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

पाठ का सारांश–

प्रस्तुत लेख रानी लक्ष्मीकुमारी की पुस्तक 'हिन्दूकुश के उस पार' से उद्धरित है। इसमें लेखिका ने अपनी रूस यात्रा का वर्णन किया है।

1. *मास्को नगर*–मास्को बड़ा सुन्दर, साफ एवं सुव्यवस्थित शहर है। 125 वर्ग मील में बसा यह नगर संसार का पाँचवाँ सबसे बड़ा नगर है। यहाँ गगनचुम्बी इमारतें हैं। सड़कें चौड़ी एवं साफ स्वच्छ हैं। सड़कों पर शान्ति रहती हैं। यातायात का शोरगुल नहीं होता। ट्रामें एवं बसों की सुन्दर व्यवस्था है। स्टेशन सुन्दर एवं साफ स्वच्छ होते है। सड़कों के नाम कवियों और लेखकों के नाम से रखे गये हैं। यहाँ गिरजाघर और मस्जिदें हैं।

2. *जनसंख्या के प्रति दृष्टिकोण*—रूस में जनसंख्या को ब प्रयास किया जाता है। अधिक सन्तान उत्पन्न करने वाली माताओं भत्ते मिलते हैं। दस बच्चों की माँ को 'वीर-माता' की उपाधि से सम्म किया जाता है।

3. *मास्को विश्वविद्यालय*--इसकी स्थापना 1755 में हुई थी 162 हैक्टेयर भू भाग पर बसा है। इसमें 17 संकाय हैं तथा डेढ़ अध्यापक अध्यापन करते हैं। यहाँ 23,700 छात्र अध्ययन करते हैं से 80 प्रतिशत को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। ये छात्र 60 देशों से आ हैं। इसमें 8 संग्रहालय और एक विशाल पुस्तकालय है जिसमें पचास पुस्तकें हैं। यहाँ एक ताल भी है।

4. *लेनिन पुस्तकालय*—इसमें दो करोड़ पुस्तकें है। इसका भ मंजिला है। इसमें दो हजार कर्मचारी काम करते है। इसकी सदस्य 1,66,000 है।

5. *पत्र-पत्रिकाएं*- सोवियत नारी एवं प्रोनजा काय प्रवदा य प्रसिद्ध पत्रिकाएं हैं जो संसार की नौ भाषाओं में प्रकाशित होती है

6. *कवि सम्मेलन*- लेखिका जब मास्को गई तो वहाँ के भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन रखा। इसमें भारतीय, रूसी एवं पाकि कवियों ने कविता पाठ किया। लेखिका इससे बड़ी प्रभावित हुई। कवि सम्मेलनों को विश्व शान्ति का सरल साधन माना है।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. नीचे लिखे युग्म-शब्दों के दोनों शब्दों में जो अर्थभेद हो, उसे कीजिए—

(i) पूर्ववत् और भूतपूर्व
 पूर्ववत् = पहले की तरह
 भूतपूर्व = पहले का, भूतकाल का

(ii) यातायात और आवागमन
 यातायात = एक स्थान से दूसरे स्थान को आने जाने का या क्रिया।
 आवगमन = आना-जाना।

(iii) शोर गुल और चहल-पहल ·

शोर-गुल = कोलाहल, (अप्रिय होती है)

चहल-पहल = रौनक। आनन्द की भीड़-भाड़

2. नीचे लिखे शब्दों का समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए—

पद	*समास-विग्रह*	*नाम*
धक्का-मुक्की	धक्का और मुक्की	द्वन्द्व
विश्वविद्यालय	विश्व के लिए विद्यालय	तत्पुरुष
सर्वश्रेष्ठ	सर्व से श्रेष्ठ	कर्मधारय
पाठ्य पुस्तक	पढ़ने के लिए पुस्तक	तत्पुरुष
यातायात	यात और आयात	द्वन्द्व

3. 'करण' प्रत्यय लगाकर तीन शब्द लिखिए—

उत्तर—

शब्द		*प्रत्यय*	*निर्मित शब्द*
सौन्दर्य	+	करण	सौन्दर्यीकरण
अभिनव	+	करण	अभिनवीकरण
प्रस्तुत	+	करण	प्रस्तुतीकरण

4. नीचे लिखी प्रत्येक उक्ति का आशय लगभग 50 शब्दों में स्पष्ट कीजिए-

(i) क्रूर रक्तपात मानवता की अनुभूतियों को नहीं मिटा सकता।

उत्तर—मानवता शाश्वत होती है। उसे न तो भौतिक सीमाएं बांध सकती है और न क्रूर रक्तपात मिटा सकता है। मानवता इनके प्रहारों की परवाह नहीं करती। भयानक युद्धों मे लिप्त देशों के नागरिक आपस में मिलने पर दुश्मनी भुला एक दूसरे का स्वागत करते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि मानव मूलत: एक है, वह कुछ संवेदनाओं से बन्धा है।

(ii) कवि और कलाकार को देश तथा काल की सीमा में नहीं बाधा जा सकता।

उत्तर—कवि और कलाकार संवेदनशील होते हैं। वे भावुक होते हैं और मानवता के उपासक। वे देश तथा काल की सीमाओं से परे होते है।

5. कवि और कलाकार ही विश्व में सच्ची और स्थायी शान्ति की स्थापना कर सकते है। ऐसा क्यों है? इसका प्रमुख कारण बताइए।

उत्तर- कवि और कलाकार विभिन्न देशों की अनुभूतियों और अन्त को समझने के लिये तथा सद्भावनापूर्ण वातावरण तैयार करने के प्रयास करते हैं। उनके इन प्रयासों से ही विश्व में स्थायी शान्ति स्थ हो सकती है।

6. मास्को में हुई कवि-गोष्ठी की जिन प्रमुख विशेषताओं ने लेखिका आनन्दमग्न कर दिया, उनका उल्लेख कीजिये।

उत्तर— मास्को म हुई कवि-गोष्ठी ने लेखिका को आनन्दमग्न दिया था। इसका कारण था कि कवियों में अपनापन था। वे एक दू निकट थे। वे देश की सीमाओं से परे थे। सभी के हृदयों में दर्द था, मो थी, पछतावा था और शर्म थी। सारा वातावरण काव्यमय एवं मा पूर्ण था। आत्मीयता की अनुभूति एवं लयलीन स्वर लहरी ने लेखिक आनन्दमग्न कर दिया था।

7. "वैज्ञानिक शिक्षा ने धार्मिक विश्वास को बहुत निर्बल कर दिया एक उदाहरण देकर सिद्ध कीजिये।

उत्तर—वैज्ञानिक शिक्षा ने हमारे धार्मिक विश्वासों को झकझोर है। अब हम चन्द्रमा को देवता नहीं मानते तथा न ही अब हमारा वि इस बात में है कि वर्षा इन्द्र भगवान के ही आदेश से होती है।

8. किस गुण वाले कवि को लेखिका सच्चा कवि मानती है?

(क) जो मधुर स्वर में कविता सुना सके
(ख) जो देश की सीमा से उठा हो
(ग) जो कट्टर देशभक्त और राष्ट्रवादी हो
(घ) जो गाकर कविता न पढ़े
(च) जिसकी कविता खूब हिलाने वाली हो। उत्तर-

9. लेखिका को मास्को में आयोजित कवि सम्मेलन बड़ा आनन्दप्रद आपको भी यदि किसी कवि सम्मेलन में आनन्द विभोर होने का मिला हो, तो उस की विशेषताओं का वर्णन लगभग 100 श कीजिये।

उत्तर—पिछले वर्ष हमारे नगर में 'रस-कलश' नामक संस्था द्वा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसमें देश के कई महान् ने भाग लिया था। मुझे इन्हें सुनने का अवसर मिला। सम्मेलन में

सों की कृतियों का पाठ हुआ। हास्य सम्राट काका हाथरसी एवं निर्भय हाथरसी ने अपनी हास्यरस-प्रधान कविताओं में श्रोताओं को खूब हंसाया। बालकवि बैरागी एवं शनिश्चर जी ने अपने व्यंगों से जनता के मानस को झकझोरा तो नीरज एवं मुकुल जी ने अपने मधुर गीतों से हमारे हृदयों को गुदगुदाया। देश प्रेम की कविताओं ने हमारे मानस के द्वार खोल दिये। श्रीमती माया गोविन्द ने अपने कोकिल कंठ से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। काव्य रस से डूबे श्रोता एक-मन एक-तन हो रहे थे। शरीर की सीमाओं से निकल हम सब अलौकिक वातावरण में विचरण करने लगे थे। निश्चय ही कवि व्यक्ति को थोड़ी देर के लिए अपनी सांसारिक समस्याओं से निकाल भाव भूमि पर ला खड़ा कर देते हैं जहां किसी प्रकार का अन्तर नहीं होता।

10. मास्को विश्व-विद्यालय की उन विशेषताओं का उल्लेख करिए जो भारतीय विश्वविद्यालयों मे प्रायः नहीं दिखाई देती। (100 शब्दों में)

उत्तर—मास्को विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों में से 80 प्रतिशत छात्रों को छात्रवृतियां मिलती है। इसमें 60 से भी अधिक देशों के छात्र शिक्षा पाते हैं। यह अपनी पाठ्य पुस्तकें स्वयं ही छापता है। यहां आठ संग्रहालय हैं और इस का पुस्तकालय विशाल है जिस में 50 लाख पुस्तकें हैं।

11. नीचे लिखे बिन्दुओं के आधार पर भारत और मास्को के जन-जीवन का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— (i) *यातायात की सुविधा और यात्रियों का आचरण*–रूस में चौड़ी-चौड़ी सड़कें हैं। यहां की सड़कों पर चलने में भीड़-भड़क्का नहीं होता। दुर्घटनाएं बहुत कम होती हैं। मोटरों को हार्न बजाने की इजाजत नहीं है। किसी प्रकार का शोरगुल नहीं होता। राहगीर चलते हुए बातचीत नहीं करते। बसों एवं ट्रामों में शान्ति रहती है। इनमें बैठने के लिए धक्का-मुक्का नहीं होती। नागरिक अनुशासनप्रिय होते हैं। स्टेशनादि खूब सजे हुए होते हैं। इसके विपरीत भारत में भीड़-भाड़, धक्का-मुक्की, गन्दगी एवं अनुशासन-हीनता का नजारा देखने को मिलती है।

(ii) *सड़कें और स्टेशनों की सजावट*–रूस की सड़कें साफ, स्वच्छ एवं चौड़ी हैं। स्टेशन कलात्मक ढंग से सजे होते हैं। यहां धातु एवं पत्थर की

भव्य कलात्मक कृतियां देखते ही बनती है। इन के विपरीत स्टेशन गन्दे एवं सड़कें सकरी एवं गन्दी होती है।

(iii) पुस्तकालय और पत्र-पत्रिकाएं - रूसी पढ़ने के बड़े श है। यहां का लेनिन पुस्तकालय अपने ढंग का एक ही है। इसमें क पुस्तकें है। इसकी सदस्य संख्या 1,66,000 है। मास्को से कई पत्र-प निकलती है। सोवियत नारी और ओनेजस्कोया प्रवदा क्रमशः म और बच्चों की पत्रिकाएं हैं। ये संसार की प्रमुख भाषाओं में छपती है

(iv) जनसंख्या के प्रति राष्ट्र की नीति - यहां भारत के विप संख्या वृद्धि को प्रोत्साहन दिया जाता है। प्रति बच्चा भत्ता मिलता 10 बच्चों की मां को 'वीरमाता की उपाधि दी जाती है। भारत नहीं। यहां जनसंख्या पर रोक लगाई जाती है।

12. 'काव्य मंच और कौमी एकता' विषय पर लगभग 300 शब्द एक निबन्ध लिखिए।

काव्य मंच और कौमी एकता

भारत एक विशाल देश है। इसमें विभिन्न भाषा-भाषी, प्रजाति धर्मों के लोग रहते हैं। यहां विभिन्नता के दर्शन हर क्षेत्र में होते है। वि धर्मों के लोग होने के कारण भावात्मक एकता का अभाव है। विभिन्न भ बोली जाती हैं अतः कौमी एकता का अभाव यहां देखा जा सकता है। आवश्यकता है कि भारतवासी एक सूत्र में पिरोये जाएं। यदि ऐसा न तो देश की उन्नति सम्भव नहीं।

कौमी एकता आज की आवश्यकता है। जहां हम शिक्षा एवं एकता भाषा के माध्यम से कौमी एकता स्थापित कर सकते हैं, वहीं कवि-सम्मे एवं गोष्ठियों के द्वारा भी यह कार्य कर सकते है।

काव्य- मंच राष्ट्रीय एकता का सफल साधन है। विभिन्न लोगों अनुभूतियों और अन्तरात्मा को समझने केलिए तथा सद्भावना-पूर्ण वाताव तैयार करने मे ये सम्मेलन बड़े सहायक होते हैं। कवि ही सच्ची एक स्थापित कर सकते हैं। कवि सच्ची एव स्पष्ट बात कहते है। वे हृदय छूने वाली बात कहते हैं। उसकी वाणी में वह जादू होता है कि देश अ काल की सीमाओं को तोड़कर मनुष्य एकता का भाव अनुभव करता है। अ मानव अनुभूतियों का गायक होता है। मानव अनुभूतियां एक-सी ही हो है। कवि इनको जगाकर लोगों को एकता के सूत्र में बांधता है।

कवि की वाणी में मधुरता होती , वह कड़वी बात भी कविता की रता में बाँधकर कहता है। उसकी बात शुगर कोटेड पिल्स की तरह ा गटक लेता है। अतः उसकी वाणी का प्रभाव सर्वाधिक होता है। अपनी वाणी से लोगों में एकता की प्रेरणा जगा सकता है।

अत. राष्ट्रीय एकता के लिए कवियों का प्रयास ही एकमात्र कारगर धन हो सकता है।

5. संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई

—हरिशंकर परसाई

ठ का सारांश—

प्रस्तुत निबन्ध में विचारों और आचरण में विरोध का उद्घाटन ा गया है।

विचारों पर संस्कार हावी—

1- एक *मार्क्सवादी*–एक थे मार्क्सवादी। बीसों साल से परिवार से ग, राजनीति में लीन; पर पिता की मृत्यु पर उनकी भस्म लेकर प्रयाग ण के लिए जाते हैं। विचारों से आधुनिक, पर आचरण से पुरातनवादी।

2- एक *मित्र*– लेखक के एक मित्र नवीन विचारधारा वाले, पर ारों से बन्धे होने के कारण सत्यनारायण की कथा करते है और ार और शास्त्र की लड़ाई का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

3- एक *साहित्यकार*–एक साहित्यकार मित्र ने लेखक को चाय पर ाया और आधुनिकता का स्वांग भरने के लिए कहा कि उनकी पत्नी उन्हें चाय पर बुला रही है। लेखक के घर जाने पर साहित्यकार की में ही रहती है और सामने तक नहीं आती।

संस्कारों पर अर्थशास्त्र हावी–

दूसरी बार मिलने पर वही अति-आधुनिका होकर सामने आती है। परिवर्तन का कारण साहित्यकार ने 'एक की कमाई से काम न चलना' ाया। अर्थशास्त्र ने संस्कार का गला बनाया।

दूसरा उदाहरण एक लड़की का है जिसे एक लड़का भगाकर
और परिवार के 15 हजार बच गये। संस्कारी माँ रो धोकर शा
और अन्त में प्रसन्न भी कि दहेज से बचे।

तीसरा उदाहरण पण्डित द्वारकानाथजी का है जो गोरक्षा आ
के नेता थे पर अब जूतों की दुकान खोल कॉफ लेदर के जूते बेच
आचरण और विचारों का कैसा अन्तर!

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. निम्नांकित शब्दों के शुद्ध हिन्दी रूप लिखिये।

उत्तर—

शब्द	*हिन्दी शब्द*
फजीहत	दुर्गति, दुर्दशा
तजुर्बा	अनुभव
एम्बुलेंस	रोगी वाहन
मदर-इन-ला	सास
डायबटीज	मधुमेह
कॉल बेल	दरवाजे की घण्टी
कॉफ लेदर	बछड़े का चमड़ा

2. इन समस्त पदों में से कौनसा पद करण तत्पुरुष से बना है?

(क) पिण्डदान (ख) दुविधाग्रस्त (ग) गोहत्या
(घ) अर्थशास्त्र (च) क्रान्तिकारी। उत्तर—

3. मूल शब्द एवं प्रत्यय बताइए—

उत्तर—

शब्द	*मूल शब्द*	*प्रत्यय*
साहित्यिक	साहित्य	इक
आधुनिक	अधुना या अधुनातन	इक
बुद्धिवादी	बुद्धि	वादी
सामाजिक	समाज	इक
राजनैतिक	राजनीति	इक

4. प्रयाग और इलाहाबाद में लेखक ने क्या अन्तर बताया है?

उत्तर—लोग जब चोरी करने जाते हैं तब इस शहर को वे इला
कहते हैं और जब पिण्डदान करने जाते हैं तो वे इसे प्रयाग कहते

लेखक के विचार से दोस्त ने सच्चा पिता किसे मान रखा था? उसकी इस धारणा का क्या कारण था ?

उत्तर—लेखक के दोस्त का सच्चा पिता मार्क्सवाद था। उसके ऐसा चने का कारण यह था कि उनका दोस्त बीस साल से परिवार से नाता ड मार्क्सवाद की सेवा में लीन था। वह कट्टर मार्क्सवादी था। परिवार उनका कुछ भी लेना-देना नहीं था।

. लेखक को अपने दोस्त के पिता की मृत्यु की अपेक्षा किस बात की अधिक चिन्ता थी ?

उत्तर— लेखक को चिन्ता थी कि उनका दोस्त बीस साल से भी धिक समय से जिस सिद्धान्त की सेवा कर रहा था, वह उसके विरुद्ध ाचरण कर रहा है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं आधुनिक बुद्धिवाद वाले ।क्ति द्वारा पिण्डदान करना उस के विचारों के विरुद्ध आचरण करना ा। इस तरह वह मार्क्सवाद की हत्या कर रहा था।

. लेखक के द्वारा एक से अधिक बाप की कल्पना कहाँ तक युक्तिसंगत है? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—लेखक की धारणा है कि आधुनिक व्यक्ति कई विचारधाराओं ा मानने वाला है। वह इनके प्रति निष्ठावान रहना चाहता है पर परि-थितियों के अनुरूप इनमें परिवर्तन भी कर लेता है। उसकी हर क्षेत्र से ुड़ी हुई अलग-अलग मान्यताएं होती हैं। ये मान्यताएं ही उसकी पिता ोती हैं।

. सांकल को काल बेल क्यों कहा गया है ?

उत्तर—सांकल का उपयोग किसी को बुलाने के लिये किया जाता रहा , ठीक उसी तरह जैसे आजकल काल बेल का उपयोग होता है। लेखक ने इसीलिए सांकल को काल बेल कहा है।

) अर्थशास्त्र ने संस्कार को धोबी पछाड़ किस प्रकार दी ? उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर—आधुनिक युग में संस्कारों को कहीं हार खानी पड़ी है तो अर्थ-शास्त्र के हाथों। धन के संस्कारों को तोड़ा है। पुरातनवादी पत्नी के संस्कार अर्थशास्त्र से मात खाते हैं। वह अब नौकरी करती है। पर्दे में रहने वाली बहू 'एक की कमाई से काम नहीं चलता वाले अर्थशास्त्र के

सिद्धान्त से मात खाकर पर्दे से बाहर आती है। संस्कारी परिवार की मार से ही अपनी लड़की का 'सरकारी विवाह' सहन कर लेता

10. लेखक ने नारी-मुक्ति का क्या कारण माना है ?

(क) आन्दोलन (ख) आधुनिक दृष्टि

(ग) व्यक्तित्व की स्त्री (घ) महंगाई

(य) यांत्रिक प्रगति

उत्तर—

11. आशय स्पष्ट कीजिए।

(1) मुजे लगा, जैसे एम्बुलेंस की गाडी ने ही मुजे कुचल दिया हो।

उत्तर—जिसका सहारा लिया जाए वही मृत्यु का कारण बन जा यहां एम्बुलेंस सहारे का प्रतीक है पर इसी से कुचला जाना कष्टकारक जिन सज्जन से लेखक क्रन्तिकारी एवं आधुनिक विचारों की प्रेरणा ग्रह करता था उन्हीं को पुरातनवादी के रूप में सत्यनारायण की कथा पर दे देखकर लेखक ऐसा अनुभव करता है।

(2) उस घर में बिल्ली एकमात्र मादा थी जो पर्दा नहीं करती थी।

उत्तर—लेखक जिन साहित्यकार मित्र के घर चाय पीने गए थे वह पर्दा-प्रथा थी। कोई भी स्त्री पर-पुरुष के सामने नहीं आती थी। लेखक व्यंग्य से कहा है कि एक बिल्ली तो जरूर पर्दा नहीं करती थी।

12. संस्कार और शास्त्र की लड़ाई के आधार पर हरिशंकर परसाई की रचना शैली की विवेचना कीजिये।

उत्तर—हरिशकर परसाई आधुनिक व्यंग्य-लेखकों में अग्रणी हैं। इनके लेख समाज में व्याप्त विसंगतियों, बुराईयों पर गहरी चोट करने वाले हैं। उनके व्यंग्य का उद्देश्य समाज में सुधार लाना है। वे समाज पर तीखा प्रहार करते हैं पर उनका उद्देश्य किसी का मखौल उड़ाना मात्र नहीं होता। उनके लेखों के विषय है—राजनीति, शिक्षा, धर्म, संस्कार, परम्पराएं, सरकारी ऑफिसर, लालफीताशाही। इन विषयों पर वे सहज भाव से व्यंग्य करते चलते हैं।

श्री परसाई एक साफ सुलझी हुई जीवन-दृष्टि के धनी हैं। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, ढोंग, अवसरवादिता, अन्ध-विश्वास, साम्प्रदायिकता आदि अनेक कुप्रवृत्तियों पर तीखा प्रहार करना जैसे इनका साहित्यिक धर्म है। कहने की पद्धति भले ही हलकी-फुलकी हो, परन्तु उनकी हर कृति सामाजिक

टिल परिस्थितियों को सुलझाने के लिए एक अन्तर्दृष्टि अवश्य प्रदान रती है। परसाईजी की भाषा सरल एवं सहज है। इनकी भाषा साधारण लचाल की भाषा हैं, पर शब्दों के प्रयोग भाव को व्यजित करने वाले । उन्होंने उर्दू व अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का भी सहज ही प्रयोग किया । वाक्य-विन्यास सरल हैं। साधारतः सरल वाक्यों का और बोलचाल वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

3. प्रस्तुत पाठ की विचारधारा से आप कहां तक सहमत हैं। अपने र्क प्रस्तुत करते हुए उत्तर दीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत लेख में लेखक ने आधुनिक लोगों के विचार और ाचरण के विरोध का उद्घाटन किया है। निश्चय ही यह बात सही भी । आजकल लोगों की कथनी और करनी में स्पष्ट विरोधाभास नजर ाता है। आज का आम भारतीय दोहरे व्यक्तित्व का धनी है। वह ाचारों से प्रगतिशील लगता है पर उसका आचरण ठीक उसके विचार के ापरीत होता है। वह पुरान संस्कारों से इतना जकड़ा हुआ है कि वह पना आचरण अपने नवीन विचारों के अनुरूप नहीं बना पाता। उसक ाचरण में कहीं नवीनता आती भी है तो वह आर्थिक दबाव के कारण । सके पुराने संस्कार तब ही वह छोड़ पाता है। लेखक ने ऐसी ही स्थिति ा चित्रण किया है। मैं उनकी इस विचारधारा से पूर्णरूपेण सहमत है।

4. मनुष्य की मान्यताएं और उसका व्यवहार।

ऊत्तर—मनुष्य की मान्यताएं और उसक व्यवहार में सदैव अन्तर रहा । आज के युग में तो यह और भी स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। आज आदमी के विचार व आचरण में विरोधाभास है। उसका आचरण उस परम्परागत संस्कारों और शिक्षा से प्राप्त मान्यताओं के विपरीत है।

मेरे एक पड़ोसी हैं। वे कुलीन ब्रह्मण हैं। उनके परिवार में आज तक राब तो क्या बीडी तक किसी ने हाथ नहीं लगाया। वे नशाबन्दी ांदोलन के प्रमुख नेताओं में से हैं, पर पिछली बार जब शराब के ठेके का सला आया तो उन्होंने खूब सा धन देकर अपने बड़े लड़के के नाम ान्ट्रेक्ट ले लिया। जब मैंने पूछा कि यह क्या है? तो बोले इसमे कमाई च्छी है। धन के मोह ने उनके सस्कारी मन को मात दे दी।

एक मेरे दोस्त हैं। वे गाधीवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक हैं। अहिंसा के वे बड़े कायल है। जहां भी जब भी उन्हें अवसर मिलता है,

अहिंसा के गीत गाते हैं। वे दुकान करते हैं। साथ ही लोगों को रु
उधार देते हैं। एक दिन व्यक्ति को उन्होंने सौ के बदले 90 रु
और बोले, भाई, एक महिने का पांच रुपये ब्याज और लगेगा।
मुझे आश्चर्य हुआ मैंने पूछा—यह क्या अहिंसा है। तो बोले यह
है। इसमें अहिंसा का क्या काम ?

इसी तरह हमारे मोहल्ले में एक बुढ़िया है। वह महिला मण्डल
अध्यक्षा है और दहेज उन्मूलन आन्दोलन की सचिव। पर उन्होंने जय
जी की लकड़ी को बहू बनाने से इसलिये मना कर दिया कि वे मां
दहेज नहीं दे सकते थे। पूछने पर कहती है— कहने की बात औ
करने की और।

ऐसा ही एक और महिला है। वह अध्यापिका है। वह स्त्रियों
स्वतन्त्रता की बड़ी उपासिका हैं। लेकिन वे अपनी बहू को घर से ब
तक नहीं निकलने देती।

ऐसे कई उदाहरण दिये जा सकते हैं जो सिद्ध करते हैं कि ल
की मान्यताओं और आचरण में कितना अन्तर होता है।

15. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की मुख्य मान्यता क्या है? समझाइए।

उत्तर—मार्क्स ने हीगेल से द्वन्द्ववाद की धारणा स्वीकार की जिस
अर्थ है कि दो विरोधी तत्वों की अन्तर्क्रिया के परिणामस्वरूप प्रगति हो
है। उन्होंने इसका प्रयोग पदार्थ क्षेत्र में किया उन्होंने द्वन्द्वात्मक भौतिकव
की शिक्षा दी। उनकी दृष्टि मे पदार्थ ही प्रधान है। आत्मा, विचार अ
चेतना तो अनु प्राप्त तत्व है। समाज का भौतिक जीवन उसके आध्यात्मि
जीवन का विधाता है। मार्क्स ने कहा है—'मनुष्य धर्म को बनाता
धर्म मनुष्य को नहीं बनाता।' उन के अनुसार ईश्वर केवल मनुष्य
दिमाग में रहता है। उन्होंने आगे कहा कि प्रगति द्वन्द्वात्मक है लेकि
मनुष्य रूप पदार्थ मूलक है।

6. मुझसा भला न कोय

—देवेन्द्र शर्मा

पाठ का सारांश—

प्रस्तुत लेख में श्री देवेन्द्र शर्मा ने आत्म-श्लाघा यानी आत्म-प्रशंसा के
पीछे छिपी मूल भावना का उद्घाटन किया है।

आत्म-श्लाघा की तृष्णा सभी व्यक्तियों में होती है। इससे साधक,
संत और भक्त भी मुक्त नहीं रहे हैं। अपनी प्रशंसा सुन व्यक्ति चाहे अपनी

रता का प्रदर्शन भले ही नहीं करे, पर मन ही मन वह पुलकित अवश्य
ा है और बार-बार अपनी प्रशंसा सुनने को लालायित रहता है।
अपनी प्रशंसा सुनने के पीछे मूल भावना यह होती है कि वह अपने
सबसे बढ़कर मानता है और अपने बारे में बार-बार सुनना चाहता
प्रशंसा एक प्रकार का नशा होता है। नशे में जिस प्रकार वास्तविकता
भ न नहीं रहता उसी प्रकार प्रशंसा सुनकर भी व्यक्ति अपनी वास्तविकता
जाता है।

अपनी प्रशंसा सुनने के लिये व्यक्ति बहुत बार झूठ भी बोलता है।
कहकर वह प्रशंसा प्राप्त करना चाहता है।

प्रशंसा निश्चित रूप से सद्गुण पर आश्रित रहती है, भले ही वह
तविक हो या कल्पित। विपरीत इसके निन्दा दुर्गुण पर आश्रित रहती है।
मनुष्य की अपनी प्रशंसा सुनने की तृष्णा का कारण यह है कि उसकी
र्णता पूर्णता में परिणत हो जाती है। वह पारमार्थिक रूप से तो पूर्ण
ही पर प्रशंसा के द्वारा प्रतिभासिक अपूर्णता की पूर्ति हो जाती है।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित शब्दों को सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम बताइए-

उत्तर—पद	सन्धि-विच्छेद	नाम
उल्लास	उत्+लास	व्यंजन सन्धि
सम्भावना	स+भावना या	
	सम्+भावना	व्यंजन सन्धि
जितेन्द्रियता	जित+इन्द्रियता	स्वर (गुण) सन्धि
प्रकारान्तर	प्रकार+अन्तर	स्वर (दीर्घ) सन्धि
शिष्टाचार	शिष्ट+आचार	,, ,, ,,
सद्गुण	सत्+गुण	व्यंजन सन्धि
दुर्गुण	दुः+गुण	विसर्ग सन्धि

. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग, मूल शब्द एवं प्रत्यय बताइए—

उत्तर—पद	मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
अपूर्णता	पूर्ण	अ	ता
प्रशंसनीय	शंस	प्र	ईय
अतिरंजित	रंजन	अति	इत
प्रातिभासिक	भास	प्रति	इक
प्रकृतस्थता	कृतस्थ	प्र	ता
चक्रवर्तित्व	वर्ती	चक्र	त्व

3. निम्नांकित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजि
उनका लक्ष्यार्थ स्पष्ट हो जाये।

उत्तर—*पानी भरना*–

वाक्य-प्रयोग—मेरी और उसकी क्या बराबरी? वह बहुत बड़ा है। मैं तो उसके सामने आजीवन पानी भरता रहूं तो भी उसके ब नहीं हो सकता।

सिरमोर होना–

वाक्य प्रयोग—तुलसीदास रामभक्त कवियों के सिरमोर हैं।

पर्दा डालना–

वाक्य प्रयोग—पुलिस ने एक युवती की हत्या के मामले पर पर्दा ड का असफल प्रयास किया।

4. निम्नांकित शब्दों का अर्थ-भेद स्पष्ट करने के लिये समुचित वाक्यों
इनका प्रयोग कीजिये—

(1) मुक्त / स्वतन्त्र / स्वच्छन्द

मुक्त = बन्धन रहित पक्षी आकाश में मुक्त संचरण करते हैं।

स्वतन्त्र = आजाद (नियमित)

आज हमारा देश स्वतन्त्र है।

स्वच्छन्द = निरकुंश

हम स्वतन्त्र हैं पर हम स्वच्छन्द नहीं हैं।

(2) झूंठा / जूठा

झूंठा = असत्य

पुलिस ने राम पर झूंठा आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया।

जूठा = उच्छिष्ट खाने से बचा हुआ भोजन।

रोगी का जूठा भोजन नहीं करें। इससे रोग-ग्रस्त होने की सम्भावन बढ़ जाती है।

(3) संकोच / लज्जा

संकोच = झिझक, हिचक।

संकोच की क्या बात है? स्पष्ट कहिये।

लज्जा = शर्म, हया, इज्जत का ख्याल।

ड़ों के सामने बोलने में मुझे संकोच होता है और धूम्रपान करने में आती है।

(4) प्रशंसा / अनुशंसा

प्रशंसा = बड़ाई

अच्छा काम करने पर बच्चों की प्रशंसा अवश्य की जानी चाहिए।

अनुशसा = सिफारिश

कक्षाध्यापकजी की अनुशंसा से ही मुझे शुल्क में छूट दी गई।

निम्नलिखित वाक्य का वाक्य विश्लेषण कीजिये —

"त्र, प्रशंसा मुझे काफी प्रिय लगी थी।"

उत्तर—

उद्देश्य		विधेय		
...श्य	उद्देश्य का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार	कर्म
...सा	वह	लगी थी	काफी प्रिय	मुझे

कबीरदास ने निन्दकों को आंगन में कुटी छवाकर रखने की सलाह क्यों दी?

(क) निन्दकों को प्रसन्न करने हेतु

(ख निन्दकों पर दृष्टि रखने हेतु

ग) निन्दकों पर कृपा करने हेतु

घ) निन्दकों को प्रशसक बनाने हेतु उत्तर—(घ)

कबीर की सम्मति के विपरीत, निन्दकों के बजाय प्रशंसको को ही लोगों ने अपने पास क्यों रखा? अपने प्रशंसकों को पास रखने वालों और पुरस्कृत करने वालों के दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर—इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलते है। रीतिकाल में तो ...ओं ने अपने दरबार में कवियों को अपनी प्रशसा के गीत गाने के लिए रखा था। राजा जयसिंह, जयपुर ने कवि बिहारी को दरबारी कवि

बनाया था। इसी तरह पृथ्वी राज ने चन्द्र वरदाई को सम्म
दरबार में रखा था।

8. "साधु, संत एवं भक्त भी प्रशंसा से मुक्त नहीं रह पाते।" इस की उदाहरण सहित पुष्टि कीजिये। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर-मानव मात्र प्रशंसा का कायल होता है। अपनी प्रशंसा सुनना कि नहीं भाता। साधु, संत और भक्तजन भी इसके अपवाद नहीं है। विश्वा ने अपनी प्रशंसा और अन्य ऋषियों की निन्दा सुनकर ही तो त्रिशंकु स-शरीर स्वर्ग भिजवाने का प्रण किया था। भगवान भी तो अपनी स सुन भक्त पर कृपा करते हैं। राजाओं ने अपनी प्रशंसा सुनकर ही बड़े दान दिये हैं। अपनी प्रशंसा सुनना सभी को सुहाता है।

9. मनुष्य प्रशंसा का इतना भूखा क्यों होता है? इस प्रश्न का लेखक क्या उत्तर दिया है और उससे कहां तक सहमत हैं।

उत्तर—लेखक ने इस प्रश्न के उत्तर में एक मंत्र का भाव प्रस्तुत कि हैं जिसके अनुसार मनुष्य का आविर्भाव पूर्ण ब्रह्म से हुआ है। सम्भव पूर्णता का बोध इसका सहज धर्म है और निन्दा से यह पूर्णता खण्डित हो है। इसलिये निन्दा अप्रिय लगती है। प्रशंसा से वास्तविक अपूर्णता पूर्णता में परिणत हो जाती है। अपूर्ण से पूर्ण निकलता है। हम प्रतिभासि रूप से ही अपूर्ण हैं, पारमार्थिक रूप से तो पूर्ण ही है और प्रशंसा के द्वा वह प्रातिभासिक अपूर्णता पूर्ण हो जाती है। इसलिये प्रशंसा प्रिय होती है मैं भी इस बात से पूर्ण सहमत हूं।

10. निम्नलिखित कथनों का आशय स्पष्ट कीजिये-

(1) प्रशंसा के लिये प्रेम जितनी अनुकूल वृति है, ईर्ष्या उतनी प्रतिकूल।

उत्तर—प्रशंसा के लिये प्रेम अनुकूल वृति है। जिससे हम प्रेम कर है उसकी हम खूब प्रशंसा करते हैं। जिन गुणों की उसमें अनुपस्थिति ह उसकी भी हम कल्पना कर उसकी प्रशंसा करते हैं। प्रेम अपनी प्रेमिक को चाहे वह कैसी ही हो चांद की चन्द्रिका के समान बताता है। मां के लिये पुत्र बालकृष्ण से कम नहीं होता। विपरीत इसके ईर्ष्या प्रशंसा के प्रतिकूल पड़ती है। जिससे ईर्ष्या हो ही नहीं सकती।

(2) प्रशंसा का बाह्य खण्डन भी शिष्टाचार में शामिल है।

उत्तर--जिस मनुष्य की प्रशंसा हो वह बाहरी तौर पर उसका खण्डन रता है। यह बात शिष्टाचार में आती है। जब कोई हमारी प्रशंसा करता तो हम शिष्टाचारवश कहते हैं—अरे, साहब हम किस काबिल हैं। ऐसा हना प्रकारान्त से प्रशंसा और सुनने का ढंग है। सभापतियों के भाषणों हम इस बात का उदाहरण देख सकते हैं। प्रशंसा सुन उसका खण्डन न रना अशिष्टाचार माना जाता है।

(3) प्रशंसा जंजीर बन पाँवों को जकड़ लेती है।

उत्तर—प्रशंसा एक ऐसा साधन है जिससे हम किसी को भी वश में र सकते हैं। प्रशसा में एक प्रकार का नशा होता है जो श्रोता को मस्त र देता है। कोई किसी तरह अनुकूल न हो तो उसकी प्रशंसा कर अनुकूल नाया जा सकता। कोई कितना भी जल्दी में क्यों न हो अपनी प्रशसा सुन क जाता है। वस्तुतः प्रशंसा जंजीर बन उसके पाँवों को जकड़ लेती है।

(4) हम प्रातिभासिक रूप में ही अपूर्ण हैं, पारमार्थिक रूप में तो पूर्ण हैं।

उत्तर—हमारा आविर्भाव पूर्ण ब्रह्म से हुआ। अतः पारमार्थिक रूप में ी हम पूर्ण हैं पर बाहर से हम अपूर्ण हैं। जहाँ तक हमारी आत्मा का प्रश्न हम पूर्ण ब्रह्म का ही एक अंश हैं। हमारा शरीर अपूर्ण है। मृत्यु के समय ात्मा-परमात्मा में लीन हो जाती है। बाहर से हम अपूर्ण लगते हैं क्योंकि ारीर का व्यवधान पूर्णता में आ खड़ा होता है और हम पूर्ण के अंशी हो ाते हैं।

. "मुझसा भला न कोय" शीर्षक की उपयुक्तता एवं सहज सम्प्रेषण के आधार पर लेखक की शैली की विवेचना कीजिए।

उत्तर—**शीर्षक की उपयुक्तता**—किसी भी रचना का शीर्षक दूकान के ाइन बोर्ड के समान होता है जो दूकान की वस्तुओं का द्योतक होता है। सको पढ़कर ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस दूकान में अमुक वस्तु मलेगी। इसी तरह किसी रचना का शीर्षक भी उसकी विषय-वस्तु की ओर गित करने वाला होता है। प्रस्तुत लेख का शीर्षक भी आकर्षक एवं उपयुक्त । लेखक ने इस पाठ में मनुष्य की आत्म-श्लाघा की तृष्णा का उद्घाटन कया है। मनुष्य अपने को सब से बढ़कर मानता है। वह अपनी प्रशंसा इसी

आधार पर सुनना चाहता है। उसकी इस भावना के पीछे अपनी पूर्णता को खण्डित न होने देने की इच्छा है। वह पूर्ण ब्रह्म का अंशी होने से अपने को पूर्ण मानता है और इसीलिए वह अपनी निन्दा सुनना पसन्द नहीं करता। इन्हीं विचारों का द्योतन शीर्षक से होता है। अतः शीर्षक उचित एवं उपयुक्त है।

(ख) **शैली**—लेखक ने अपने विचारों को बड़े ही क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया है। कबीर के दोहे से विचार प्रारम्भ कर लेखक ने व्यक्ति की आत्म-श्लाघा की इच्छा के पीछे मूल भावना का उदाहरण एवं उद्धरणों के साथ उद्‌घाटन किया है। प्रशंसा की अनुकूल और प्रतिकूल वृत्तियों का विवेचन करते हुए प्रशंसा का मानव जीवन पर प्रभाव का उदाहरण सहित विवेचन किया है और सार रूप में प्रशंसा सुनने के पीछे छिपी मूल भावना का श्लोक के माध्यम से विवेचन किया है।

भाषा-शैली विषयानुरूप गम्भीर है। पर भाषा में जटिलता नहीं है। पर्याप्त उद्धरणों के द्वारा लेखक ने अपनी बात की पुष्टि की है। लेखक ने विवेचनात्मक शैली का उपयोग किया है।

12. "निन्दा और प्रशंसा का आदमी पर प्रभाव" विषय पर लगभग 300 शब्दों में एक युक्तियुक्त निबन्ध लिखिए जिसमें निम्नांकित प्रश्नों पर प्रकाश डालने का प्रयास कीजिए—

(i) प्रशंसा किन-किन उद्देश्यों से की जाती है।
(ii) उसके प्रति हमारा क्या रुख हो।
(iii) प्रशंसा के खतरे और उससे बचने के उपाय।
(iv) आत्म-प्रशंसा की लत और उससे बचने के उपाय।
(v) निन्दा किन-किन कारणों से होती है?
(vi) झूठी निन्दा के प्रति हमारा क्या रुख हो?
(vii) देश में पनपती पीत पत्रिकारिता और उसको रोकने के उपाय।

उत्तर—**निन्दा और प्रशंसा का आदमी पर प्रभाव**—मानवमात्र में अपनी प्रशंसा सुनने की प्रबल इच्छा होती है। हर कोई चाहता है कि लोग उसकी प्रशंसा करें। उसकी इसी इच्छा का सहारा लेकर कई लोग उसे बेवकूफ भी बनाते हैं। उसकी झूठी प्रशंसा कर वे अपना उल्लू सीधा करते हैं। ऐसे लोगों से बच पाना साधारणतः बड़ा कठिन होता है। व्यक्ति अपनी प्रशंसा

नहोना भी करने के लिए तैयार हो जाता है। कई बार बार प्रशंसा का शुभ ...ी मिलता है। प्रशंसा कर हम प्रतिकूल को अनुकूल बना सकते हैं। ...न करने वाले छात्रों और नौकरों से काम करवा सकते हैं। प्रशंसा एक ...है। यह एक अमोघ अस्त्र है, पर अधिकतर इसका उपयोग अपना स्वार्थ ... के लिए ही होता आया है। धनिकों एवं राजाओं की प्रशंसा कर लोग ...ौर धन प्राप्त करते रहे हैं। आज भी लोग पद-प्रतिष्ठा पाने के लिए ...ोगों की चापलूसी करते हैं। यह वृत्ति खराब है।

चापलूसों से व्यक्ति को सावधान रहना चाहिए। आत्म विश्लेषण द्वारा ...ह झूठी प्रशंसा से बच सकता है। जिन गुणों के लिए उसकी प्रशंसा ...रही है, वे अपने में है या नहीं, जानना जरूरी है अन्यथा वह चापलूसों ...ुल में फंस जायेगा। झूठी प्रशंसा से हमें स्वयं को भी हानि होती है। ...म्भी हो जाते हैं और हमारा विकास रुक जाता है।

कई लोगों में आत्म-प्रशंसा की लत होती है। वे अपने मुंह मियां मिट्ठू ...हैं। आत्म-प्रशंसा कोई अच्छी आदत नहीं है। कहा भी है—Self ...se is no recommendation. आत्म-श्लाघा करने वाले पर कोई ...ा नहीं करता। इस आदत से बचना ही हितकर है।

इसके विपरीत निन्दा है। निन्दा अधिकतर हितकर होती है। निन्दा ...यों के कारण होती है। निन्दा से व्यक्ति का आचरण सुधरता है पर ... निन्दा के प्रति हमें ध्यान नहीं देना चाहिए। यदि निन्दा अच्छे व्यक्ति ... की जाती है तो मानना चाहिए कि हम में कोई कमी है, पर कोई बुरा ... ऐसा करे तो परवाह नहीं करनी चाहिए, क्योंकि बुरे व्यक्ति का तो ...ही बुराई करना है।

आजकल पत्रकारिता में भी चरित्र हनन की प्रवृति बढ़ रही है। यह ... है। इसे रोका जाना चाहिए।

---

7. भारत की एकता

—जैनेन्द्र कु

पाठ का सारांश—

प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने भारत की वर्तमान एकता पर प्रकाश है। इस एकता को अक्षुण्ण बनाने के लिए राजनीति नहीं वरन् अध की आवश्यकता है। इस बात की अनुभूति कराना ही प्रस्तुत लेख मूलोद्देश्य है।

आज भारत एक विशाल राष्ट्र है। इसका एक विधान, एक अध्यक्ष, केबीनेट और एक कानून है। इसकी एक राजभाषा है। भारत अब मुट्ठी है। यह एक अपूर्व घटना है। ऐसा कभी नहीं हुआ और हुआ भी तो समय के लिए।

इसका श्रेय राष्ट्रपिता गान्धी को है, पर वे इस राजकार्मी एकत संतुष्ट नहीं थे। इसीलिए वे राजधानी के जश्न में शामिल नहीं हुए। आध्यात्मिक एकता स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने 'ईश्वर अल्ला एक नाम' कहकर इसी एकता को स्थापित करना चाहा था।

हमारी वर्तमान एकता सरकारी एकता है। सच्ची एकता मन में उ कर ही सम्भव होती है। सरकारी एकता स्थायी नहीं होती। ब्रिटिश साम्रा ही स्थायी नहीं रहा। अतः स्थायी एकता के लिए मनों की एकता जरूरी जनमन सरकारी कानून से नहीं चलता, वह ईश्वरीय कानून से चलता है।

भारत की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए आध्यात्मिक एक स्थापित करनी पड़ेगी। इसकी एकता आत्मा द्वारा ही सम्भव है। अन्य उसकी एकता अनेकता को जन्म देने लग जायेगी और यह पराधीनता निमन्त्रण देना होगा।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. इस पाठ में से निर्देशानुसार शब्द छाँटिए—

(i) स्वर सन्धि से निर्मित चार शब्द।

उत्तर—पराधीनता, महात्मा, अनेकानेक, दीनातिदीन।

(ii) व्यंजन सन्धि से निर्मित चार शब्द।

उत्तर—संतुष्ट, सन्मति, संतोष, संस्कृतियाँ।

अव्ययीभाव और कर्मधारय से निर्मित दो-दो शब्द।
उत्तर—अव्ययीभाव— (i) खण्ड-खण्ड, (ii) अखण्ड।
कर्मधारय—(i) अल्पकाल (ii) राजकाजी।
बहुब्रीहि व द्विगु समास से निर्मित एक एक शब्द लिखिए।
उत्तर— बहुब्रीहि—राष्ट्रपिता।
द्विगु—अनेकानेक।
वह शब्द कौनसा है जिसमें 'अ' उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त नहीं हुआ है।
(क) अखण्ड (ख) अजस्र (ग) अविछिन्न
(घ) अमूल्य (च) अत्यन्त। उत्तर –(ख)
पाठ में 5 उर्दू शब्द छांटकर उनके हिन्दी रूप लिखिए।

उत्तर—उर्दू शब्द	हिन्दी शब्द
सरकारी	शासकीय
आजादी	स्वतन्त्रता
हकुमत	शासन
फौज	सेना
रियासतों	राज्य

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम दस शब्दों में दीजिए—
भारत अब बाहर के हर प्रहार को क्यों व्यर्थ कर सकता है?
उत्तर—भारत अब मुट्ठीबन्द है और एकता के सूत्र में बन्धा है अतः वह र के हर प्रहार को व्यर्थ कर सकता है।
राजधानी दिल्ली के जश्न में गांधीजी क्यों शामिल नहीं हुए।
उत्तर—गांधी जी राजकामी एकता से संतुष्ट नहीं थे अतः वे राजधानी के में शामिल न होकर आध्यात्मिक एकता के प्रयास हेतु देशाटन पर ल पड़े।
) गांधीजी ने घर-घर क्या अलख जगाई?
उत्तर—गांधीजी ने घर–घर घूमकर कर अलख जगाई कि आदमी चेते, से छूटे और एके में रहे।
जन-मन किस कानून से चलते हैं?
उत्तर—जन-मन ईश्वरीय कानून से चलते हैं।
जो एकता हमने खड़ी की है वह किस नमूने की है?

उत्तर—जो एकता हमने खड़ी की है वह सरकारी है जिसका अ
दस्तावेज है, उसका अपना तन्त्र है, फौज और कानून है।

5. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए—

(i) भारत आज की तरह मूर्त और प्रत्यक्ष कभी नहीं हुआ।

उत्तर—भारत अब से पहले एक नाम था। वह आज की तरह एक था। अब वह एक विधान के नीचे जुटकर इकट्ठा हो गया है। वह बि हुआ नहीं है। वह अब मुट्ठीवन्द है। आज ही वह मूर्त हुआ। पहले मात्र नाम था आज एक होकर प्रत्यक्ष हुआ है।

(ii) जनता महासागर है।

उत्तर—जनता महासागर की तरह विशाल है। वह अप्रत्यक्ष रूप से है। बाहर से जरूर अलग-अलग प्रतिभासित होती है। इसी प्रतिभ भिन्नता से खेल खेलना राजनीति है। अन्तर की एकता को बढ़ाकर ही ज को एक सूत्र में बांधा जा सकता है।

(iii) एकता सरकार में पहुँचकर असल नहीं होती, मन में उतर कर ही सही होती है।

उत्तर– सरकारी एकता असली एकता नहीं है। वह बाहरी एकता एक तन्त्र, एक विधान, एक कानून और एक राज्यभाषा होना ही पर्याप्त है। इनसे सरकारी एकता ही स्थापित हो सकती है। असली एकता आ की एकता से ही स्थापित हो सकती है। आध्यात्मिक एकता ही असली एक है। मन से मन मिले तब ही हम असली एकता के दर्शन कर सकते हैं।

(iv) भारत एक घर था, है और रह सकेगा तो आत्मा द्वारा।

उत्तर—भारत की भूत, वर्तमान और भावी एकता का आधार आ ही है। आध्यात्म द्वारा ही भारत की एकता सम्भव है। भारत भूत में आत्मा द्वारा एक था। आज भी एक है तो आध्यात्म द्वारा। सरकारी त से स्थापित एकता न तो स्थाई है और न असली। भविष्य में भी भा अध्यात्म द्वारा ही एक रह सकेगा।

6. भारत की एकता को स्थिर बनाए रखने हेतु हमें क्या उपाय करने होंगे इस विषय में आप जैनेन्द्र जी की मान्यता से कहां तब सहमत हैं?

उत्तर—भारत की एकता को स्थिर रखने के लिए हमें आध्यात्मि एकता स्थापित करनी होगी। हमें अलख जगानी होगी कि आदमी दुई से ह और एके में रहे। आध्यात्म द्वारा ही मन की एकता स्थापित रह सकती है

प्राचीन भारत इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है। भारत में अनेकानेक राजतंत्र आये पर जनता एक सूत्र में बंधी नहीं। इसका कारण था कि सन्तों ने अध्यात्म को जिन्दा रखा। राम और कृष्ण की याद ने जन मानस को एक सूत्र में पिरोये रखा। आज भी यह उपाय कारगर हो सकेगा। जैनेन्द्र जी की मान्यता वस्तुतः स्थाई एकता स्थापित करने में सक्षम है।

7. सिद्ध कीजिए कि भारत की कल्पना राजाओं और राजनेताओं पर नहीं अटकी। उनके पार, आत्मवेत्ताओं पर वह ध्रुव बांधकर जमीन रही।

उत्तर—भारत में सदैव से आत्मवेत्ताओं को ही राजा-महाराजाओं से बढ़कर माना है। राजा आये और गये। वे जीवन भर राज्य-विस्तार या राज्यारोहण के लिए पराक्रम करते रहे, फिर भी भारत ने राम और कृष्ण को भुलाया नहीं। उसने बुद्ध और महावीर को याद रखा। जिन्होंने राज्य का परिहार किया। शंकर-चैतन्य को और नानक-गांधी को मान दिया। भारत की आत्मा ने इनको पहचाना। भारत इनके प्रभाव के नीचे पनपा। इसीलिए समूचा भारत एक आदर्श, एक अभिलाषा, एक संस्कृति में अनुस्यूत रहा।

8. प्रस्तुत पाठ के आधार पर जैनेन्द्र की शैलीगत विशेषताएं बताइए।

उत्तर—जैनेन्द्रजी विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। वे गहन चिन्तक एवं विचारक हैं।

इनके निबन्धों का क्षेत्र व्यापक है। विविध विषयों पर उन्होंने सारगर्भित निबन्ध लिखे हैं। इनके निबन्धों में दार्शनिक विचारों का सहज प्रस्फुटीकरण हुआ है। प्रस्तुत निबन्ध में भी आपने भारत की एकता के दार्शनिक पक्ष पर अपने विचार रखे हैं। उन्होने भारत की एकता का आधार आध्यात्म को ही माना है।

जैनेन्द्र अपने गहन दार्शनिक विचारों को तर्क की कसौटी पर कस कर ही प्रस्तुत करते हैं। उचित उदाहरणों एवं तर्कों के आधार पर अपनी मान्यता को हमारे सम्मुख रखते हैं।

इनकी भाषा सहज एवं सरल है। इनके निबन्धों में तत्सम शब्दों की बहुलता होती है पर भाषा में दुरूहता कहीं नहीं है। बोलचाल के उर्दू शब्दों का भी इनकी भाषा में सहज समावेश हुआ है। संक्षिप्त भाषा इनकी शैली की प्रमुख विशेषता है।

बंकिम कथनों का प्रभाव भी निराला है। इनके वाक्य सुगठित एवं छोटे-छोटे होते है। लम्बे-लम्बे और जटिल वाक्यों का प्रयोग बहुत कम हुआ है।

9. महात्मा गांधी लिखित 'आत्म-कथा' पढ़िये और उन चारित्रिक गुण को नोट कीजिए जिनके कारण वे निरन्तर ऊपर उठते गये। फि 'महात्मा गांधी की भारत को देन' विषय पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखिए।

उत्तर— **महात्मा गांधी की भारत को देन**—महात्मा गांधी आधुनिक भारत के जन्मदाता थे। उन्होंने भारत को सदियों की दासता से मुक्त करवाया और वह भी बिना किसी प्रकार की हिंसा के। उन्होंने अहिंसा और सत्य के आधार पर अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिये बाध्य किया था। उनके ही प्रयासों से आज हम स्वतन्त्र वातावरण में सांस ले रहे हैं।

गांधीजी ने भारत को एक सूत्र में पिरोया। आज जो एकता नजर आ रही है वह बापू की ही देन है। उन्होंने साम्प्रदायिकता को समाप्त कर हिन्दू-मुस्लिम एकता को सुदृढ़ किया था।

गांधीजी ने अस्पृश्यता के भूत को भगाकर अछूतों को उन्नत करने का प्रयास किया। उन्हीं के अथक प्रयासों से सदियों से पददलित जातियाँ ऊपर उठ पाईं। नारी की स्वतन्त्रता को उन्होंने साकार रूप दिया।

देश को उन्होंने समाजवादी समाज का रूप दिया जहाँ सब समान हैं। सभी को समान अवसर मिले हैं। उन्होंने सत्ता का विकेन्द्रीकरण कर पंचायती राज की स्थापना की प्रेरणा दी। आर्थिक विकेन्द्रीकरण हेतु उन्होंने छोटे-छोटे उद्योगों और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया। गाँधीजी ने भारत के उपयुक्त शिक्षा प्रणाली भी दी। उनकी बेसिक शिक्षा व्यवसाय केन्द्रित है और भारत की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप। गांधीजी ने धर्म के नाम पर कोई धर्म तो नहीं चलाया पर सत्य, अहिंसा पर बल दिया। उन्होंने सर्व-धर्म-सम-भाव की स्थापना की। उन्होंने ईश्वर-अल्लाह, की एकता स्थापित की।

वस्तुत: गांधीजी भारत के सच्चे संत हुए हैं जिन्होंने राजनीति और धर्म का गठबन्धन करने का प्रयास किया। उन्होंने साधन और साध्य की पवित्रता पर बल दिया और इस तरह राजनीति को नैतिकता से जोड़ा।

भारत आज जो कुछ है वह गांधीजी के कारण है। राष्ट्र ने उनको राष्ट्रपिता कहकर अपनी विनम्र कृतज्ञता ही प्रकट की है।

8. गेहूँ बनाम गुलाब

रामवृक्ष बेनीपुरी

का सारांश —

प्रस्तुत निबन्ध में बेनीपुरीजी ने भौतिकता पर मानसिक आनन्द की जय की ओर बढ़ने की मानव को प्रेरणा दी है। 'गेहूं' भौतिकता का तीक है और 'गुलाब' मानसिक तृप्ति का। इन दोनों के सामंजस्य में ही ी जीवन की कल्पना सम्भव है।

गेहूं हम खाते हैं शरीर को पुष्ट करने के लिए और गुलाब सूंघते हैं को तृप्त करने के लिए। ये दोनों ही आवश्यक हैं। पुष्ट शरीर पर त मानस ही हमें आनन्द दे सकता है।

जब से मानव पृथ्वी पर आया है तब से ही उसने भौतिक सुख प्राप्त रने का प्रयास किया है। भौतिकता की प्राप्ति के साथ-साथ उसने मन तृप्त करने का प्रयास भी किया। उसने उस दिन से, जिस दिन वह कर खड़ा हुआ, पेट पर मानस की विजय की घोषणा की। उसके शरीर मस्तिष्क का सर्वोपरि स्थान है, पेट का नीचे। इसीलिए उसने मानस की पर विजय की दुन्दुभी बजाई। प्राचीन काल के व्रत, उपवास, तपस्या ादि इसी बात के प्रमाण हैं।

जब तक मानव ने पेट और मानस में सन्तुलन रखा वह सुखी रहा, पर रे-धीरे वह सन्तुलन टूट गया और वह नारकीय यन्त्रणा देने वाले श्रम लीन हो गया। परिणाम यह हुआ कि उसका मानस उपेक्षित हो गया ौर मानव दुःखी।

अब पुनः सन्तुलन स्थापित करने की आवश्यकता है। पथ अब संतुलन भी काम नहीं चलेगा। अब तो आवश्यकता है भौतिकता पर मानसिकता ी विजय की। अब हमें प्रचुरता नहीं चाहिए। यह मानव को सुख-शान्ति हीं दे सकती। प्रचुरता हो, पर उसमें राक्षसता न आने पावे इसके लिए त्तियों के उन्नयन की आवश्यकता है। अब आत्म-संयम से भी काम नहीं लने का। इसमें खतरा है गिर जाने का। अतः कामनाओं को स्थूल ासनाओं के क्षेत्र से ऊपर उठाकर सूक्ष्म भावनाओं की ओर प्रवृत्त करें — ी एकमात्र हल है। तब ही शरीर पर मानस की पूर्ण प्रभुता स्थापित हो केगी जिससे मानव को सुख-शान्ति मिल सकेगी।

है। को लेखक है। कामनाओं

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी रूप लिखिये—

उत्तर—

शब्द	हिन्दी शब्द
तरजीह	ध्यान
इफरात	बहुलता
तबाह	नाश
दीदार	दर्शन
गलीज	मैला, अपवित्र

2. इस पाठ में प्रयुक्त 'चमचम' और 'छपछप' शब्दों की ओर ध्य दीजिये। 'चमचम' दृश्य के आधार पर बना अनुकरण शब्द है अ छप-छप ध्वनि के आधार पर। आप तीन-तीन दृश्यात्मक और ध्वन्य त्मक शब्द और लिखिये।

उत्तर—

	दृश्यात्मक शब्द	ध्वन्यात्मक शब्द
1.	टिम-टिम	टप-टप
2.	चिप-चिप	खट-खट
3.	कच-पच	सर-सर

3. निम्नांकित वाक्य का उसके उपवाक्यों में विश्लेषण करके उनके ना बताइए—

"हमारा सोने का हिन्दोस्तान—यह गीत गाइए, किन्तु यह न भूलि कि यहाँ एक सोने की नगरी थी, जिसमें राक्षसता वास करती थी।"

उत्तर—

प्रधान रूप	उपवाक्य या आश्रित उपवाक्य	उपवाक्य का नाम
यह गीत गाइए—हमारा सोने का हिन्दोस्तान।	1) किन्तु यह न भूलिये।	समानार्थी उपवाक्य
	(2) कि यहाँ सोने की एक नगरी थी।	संज्ञा उपवाक्य
	(3) जिसमें राक्षसता निवास करती थी।	क्रिया विशेषण उपवाक्य

4. प्रस्तुत पाठ में गेहूं और गुलाब के प्रतीकार्थ (लक्ष्यार्थ) को स्पष्ट करते हुए बताइए कि गेहूं और गुलाब की दुनिया से क्या तात्पर्य है? दोनों का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर—गेहूं भौतिक वासनाओं, कामनाओं या सुख का प्रतीक है। यह उबाने वाले, कमर तोड़ श्रम का भी प्रतीक है। ये दुनिया को भौतिक सुखों को हड्डी तोड़ने वाले, थकान वाले, उबाने वाले, नारकीय यंत्रणाएँ देने वाले श्रम में प्रवृत्त करती है। यह हमारे शरीर को गुलाम बनाकर रखती है। पेट की क्षुधा शान्त हो भी जाए पर सुखों की चाह वासनाओं की क्षुधा जागृत कर मानव को तबाही के मार्ग पर ला खड़ा करती है।

विपरीत इसके मानसीक तृप्ति है। गुलाब को सूंघ कर मानसिक तृप्ति मिलती है। गुलाब की दुनिया मानस का संसार है—सांस्कृतिक जगत है। इसने मानव को आत्मिक शान्ति की ओर प्रेरित किया है। जिससे उसने भौतिकता पर विजय की घोषणा की। परिणामस्वरूप इन दोनों में सामंजस्य रहा; पर जब टूटा, मानव दुःखी हुआ।

5. सिद्ध कीजिये कि गेहूं और गुलाब के सन्तुलन से ही जीवन सुखी हो सकता है।

उत्तर—गेहूं और गुलाब के सामंजस्य का अर्थ है पेट और मन का सामंजस्य, शरीर और मानस का सामंजस्य, भौतिक सुखों और आत्मिक सुख का सामंजस्य। जब सामंजस्य होगा तब ही मनुष्य सुखी होगा; तब ही वह कमाता हुआ गा सकेगा और गाता हुआ कमा सकेगा; तब ही उसके श्रम के साथ संगीत बंध सकेगा और संगीत के साथ श्रम बंध पायेगा। इसमें से प्रथम की सबलता का अर्थ होगा सामंजस्य का टूटना। गेहूं का प्राबल्य मानव को उबाने वाले श्रम में लगायेगा; उसे प्रचुरता प्राप्त करने में प्रवृत्त करेगा जिसका परिणाम होगा दुःख। जब दोनों का सामंजस्य होगा तब ही प्रचुरता में राक्षसता प्रवेश नहीं कर सकेगी और परिणाम होगा सुख।

6. प्रचुरता में राक्षसता न आवे इसके लिए लेखक ने क्या उपाय बताए हैं।

उत्तर—प्रचुरता में राक्षसता न आये इसके लिये दो उपाय हैं—इन्द्रियों का संयमन और वृत्तियों का उन्नयन। इनमें से प्रथम को लेखक स्वीकार नहीं करता। वह दूसरे मार्ग को ही अच्छा मानता है। कामनाओं

को स्थूल वासनाओं के क्षेत्र से ऊपर उठाकर सूक्ष्म वासनाओं की ओर प्रवृत्त करना ही एकमात्र उपाय है।

7. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए—

(1) गेहूं तक पशु और मानव में क्या अन्तर है ? मानव को मानव बनाया गुलाब ने।

उत्तर—जहाँ तक भौतिक आवश्यकताओं का सम्बन्ध है मानव और पशु एक समान है। मूल-भूत आवश्यकताओं की पूर्ति में दोनों समान हैं। भय, आहार, निद्रा, और मैथुन में मानव पशु सदृश है। शारीरिक भूख की तृप्ति तक वह पशु ही है। पशु से अलग करने वाला तत्त्व है मानस। मानस जगत या सांस्कृतिक जगत है जो उसे पशु से मानव बनाता है।

(2) मानव शरीर में पेट का स्थान नीचे है, हृदय का ऊपर और मस्तिष्क का सबसे ऊपर।

उत्तर- शारीरिक सुखों का स्थान नीचे है जबकि मानसिक तृप्ति का स्थान सर्वोच्च। जिस तरह पेट का स्थान शरीर में नीचा होता है और मस्तिष्क का सर्वोपरि, उसी तरह भौतिक सुखों का भी स्थान निम्न होता और मानसिक सुखों का सर्वोपरि।

(3) शरीर पर मानस की पूर्ण प्रभुता स्थापित हो—गेहूं पर गुलाब की।

उत्तर—शरीर पर मन का नियन्त्रण होना चाहिए। भौतिक सुखों की कामना पर मानस की तृप्ति की प्रभुता हो, तब ही सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है।

(4) हमारे सोने का हिन्दोस्तान - यह गीत गाइए किन्तु यह न भूलिए कि यहां एक सोने की नगरी थी, जिसमें राक्षसता वास करती थी।

उत्तर—प्रचुरता के गीत गाना तो अच्छा है पर प्रचुरता में राक्षसता निवास करती है। सोने की लंका में रावण सरीखा राक्षस निवास करता था जो राक्षसता का प्रतीक था। वह रक्त पीता था, अभक्ष्य खाता था, जिसके दस सिर थे और जिसे दूसरे की बहू-बेटियों को उड़ा ले जाने में तनिक भी झिझक नहीं थी। अतः प्रचुरता से बचना ही हितकर होगा।

(5) यह तो अनहोनी बात है - उटोपिया; उटोपिया !

उत्तर—पृथ्वी और आकाश से उन तत्त्वों को सीधे ही ग्रहण करना, जिन्हें गेहूं प्राप्त करता है, अनहोनी बात है, कोरी कल्पना है। उटोपिया माने कोरी कल्पना। यह एक पुस्तक का नाम है जिसे थॉमस मूर ने लिखा है।

इस पुस्तक में मूर ने एक ऐसी दुनिया की कल्पना की है जहां सुख ही सुख है। अब यह शब्द कोरी कल्पना का पर्याय बन गया है। अतः गेहूँ को मिलने वाले तत्वों को सीधे प्राप्त करने की इच्छा भी मात्र कल्पना है।

8. इन्द्रिय-संयमन और वृत्ति-उन्नयन में आप किसे अच्छा मानते हैं और क्यों ?

उत्तर— इन्द्रिय संयमन और वृत्ति उन्नयन में से दूसरा उपाय ही अच्छा है। यह स्खलित हो सकता है। हमारे ऋषियों के उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं। आज भी हम बापू के आत्म संयमन के उपदेश के बावजूद दिन-प्रतिदिन नीचे गिरते जा रहे हैं। दूसरे उपाय में इसका कोई भय नहीं। इसमें सिर्फ वृत्तियों का ही उन्नयन करने की आवश्यकता होती है उन्हें दबाने की नहीं। वृत्तियों को दबाने पर उनके पुनः उभरने का खतरा सदा बना रहता है। दमित कामनाएँ कभी न कभी फूट पड़ती हैं। जैसे ही थोड़ा सा भी प्रलोभन मिला, वृत्तियां प्रबल हो उठती है। अतः उनका मार्गान्तरीकरण करना अथवा उनका उन्नयन करना ही ठीक रहता है।

9. 'गेहूँ और गुलाब' के लिखने में लेखक का क्या उद्देश्य रहा है ? प्रकाश डालिए।

उत्तर— प्रस्तुत लेख को लिखने में लेखक का उद्देश्य यह रहा है कि मानव को भौतिकता पर मानसिक आनन्द की विजय की प्रेरणा मिले। भौतिकता और मानसिक तृप्ति के सामंजस्य में सुखी जीवन की सम्भावना है। इस तथ्य का उद्घाटन करना ही लेखक का मूल उद्देश्य है।

10. प्रस्तुत लेख के आधार पर लेखक की रचना शैली की विवेचना कीजिए।

उत्तर—बेनीपुरीजी की शैली बड़ी रोचक है। उन्होंने एक गम्भीर विषय को बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। शैली काव्यमय है। छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा गहन विषय का विश्लेषण किया है। लेखक ने इस पाठ में प्रतीकों का प्रयोग किया है। ये प्रतीक विषय को जटिल नहीं बनाते। उन्होंने गेहूँ को भौतिकता, गुलाब को मानसिक तृप्ति तथा सोने की नगरी को प्रचुरता के प्रतीक के रूप में रखा है। सारी ही विषय-वस्तु को प्रतीकात्मक शैली में लेखक ने स्पष्ट किया है।

भाषा सरल एवं सहज है। वाक्य सरल एवं विषय-वस्तु को स्पष्ट करने वाले हैं।

———

9. सच्ची वीरता

—सरदार पूर्णसिंह

पाठ का सारांश—

प्रस्तुत निबन्ध में सच्ची वीरता का मूर्त एवं स्थूल चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शान्ति समुद्र की तरह विशाल और गहरी होती है। वे कभी चंचल नहीं होते।

वे सत्त्वगुणी और महात्मा होते हैं। उनके लिये सांसारिक ऐश्वर्य कोई महत्त्व नहीं रखता। वे निडर और निर्भय होते हैं। उनका सिंहासन लोगों का हृदय होता है। वे शहंशाह-जमाना होते हैं। वे अपनी धुन के पक्के होते हैं। कोई यन्त्रणा उन्हें मार्ग से नहीं भटकाती है। वे रुपये-पैसे का दान नहीं करने पर अपने आपको ही हवन कर देते हैं।

सच्चे वीर बड़े मौकों का इन्तजार नहीं करते, छोटे मौकों को ही बड़ा बना देते हैं। वे हर घड़ी अपने आपको महान् बनाते रहते हैं।

वीरता एक प्रकार की देवी प्रेरणा है। वह हमेशा निराली और नई होती है। वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती। वीरों के कारखाने नहीं होते। वे देवदार के वृक्षों की तरह स्वयं की चिन्ता नहीं करते। वे अपने अन्दर देखते हैं और आत्मिक उन्नति करते हैं। वे स्थिर-चित्त होते हैं।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ प्रकट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए—

उत्तर—(1) रंग चढ़ना=प्रभाव पड़ना।

वा. प्र.—वीर रस की कविता सुनकर वीरता का **रंग चढ़ना** स्वाभाविक है।

(2) रंग बदलना—नाराज होना, हालत बदल जाना।

वा. प्र.—हँसी-खुशी के माहौल में राम के दुर्घटनाग्रस्त होने के समाचार ने सारा **रंग बदल दिया**।

(3) हद दिखलाना=सीमा का भान करा देना।

वा. प्र.—गुलाम ने बादशाह को यह कहकर कि वह फांसी पर चढ़कर भी उसकी बेइज्जती कर सकता है, उसे उसकी **हद दिखा दी**।

(4) ओठ सूखना = थकान का अनुभव करना, अधिक प्यासा होना।

वा. प्र—जेठ की तपती दोपहरी में हमें मीलों पैदल चलना पड़ा। ी हालत देखते ही बनती थी। ओठ सूख गये थे, शरीर पसीने से तर-था।

(5) दुनिया की खबर न होना—बाहर क्या हो रहा है, इसकी जान- न होना।

वा. प्र.—वह हमेशा अपने में ही सिमटा रहता है। उसे दीनो दुनिया खबर नहीं रहती।

निम्नांकित शब्दों के हिन्दी समानार्थी रूप लिखिये।

उत्तर—

शब्द	हिन्दी समानार्थी
दरख्त	वृक्ष, पेड़
बादशाह	राजा
बुजदिली	कायरता
काफिर	नास्तिक
गुलाम	दास
मुकाबला	सामना
इलहाम	आकाशवाणी, ईश्वरवाणी
कुदरत	ईश्वर शक्ति, प्रकृति

सन्धि-विच्छेद कीजिए और उनका नाम बताइए।

उत्तर—

पद	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
पिण्डोपजीवी	पिण्ड + उपजीवी	स्वर (गुण) सन्धि
सिंहासन	सिंह + आसन	स्वर (दीर्घ) सन्धि
ब्रह्मोऽस्मि	ब्रह्मः + अस्मि	विसर्ग सन्धि
दुर्भिक्ष	दुः + भिक्ष	विसर्ग सन्धि
परोपकारी	पर + उपकारी	स्वर (गुण) सन्धि

समास-विग्रह कीजिये और समास का नाम बताइये।

उत्तर—

पद	समास-विग्रह	समास का ना
प्राणसारंगी	प्राणों की सारंगी	तत्पुरु
परोपकारी	पर+उपकार करने वाला अर्थात् दयावान	बहुव्रीहि
आजकल	आज और कल	द्वन्‍
हृदयाकश	हृदय का आकाश	तत्पुरु
चिरस्थायी	चिर काल तक स्थायी	कर्मधारय

5. निम्नलिखित का अर्थ स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—(1) काफिर=नास्तिक, मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म मानने वाला।

(2) फकीर=साधु, भिखमंगा

(3) पीर=सिद्ध महात्मा

(4) कापालिक=शैव मत के तांत्रिक साधु जो मद्य-माँस खाते हैं तथा हाथ में मनुष्य का कपाल रखते हैं।

(5) पिण्डोपजीवी=श्राद्ध खाने वाला ब्राह्मण, दूसरों पर आश्रित

(6) टकसाल=वह स्थान जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं

(7) पालिसी=नीति

(8) अगम्य=जहाँ पहुँचा न जा सके।

6. दुनिया के राजाओं की दौड़ है—

(क) सिंहासन तक (ख) ऐश्वर्य तक
(ग) शरीर तक (घ) कायरों तक
(च) गुलामों तक

उत्तर (ग)

7. सच्चे वीर के तीन प्रमुख गुणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—सच्चे वीर धीर, गम्भीर और आजाद होते हैं।

8. हमारे असली और सच्चे राजा कौन हैं? सच्चे राजा की विशेपताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—हमारे असली और सच्चे राजा सच्चे वीर होते हैं जिनका सिंहासन लोगों के हृदय-कमल की पंखुड़ियों पर है। सच्चे राजा अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते हैं। वे दिलों पर

ासन करते हैं। वे निर्भय, निडर होते हैं। वे आजाद और और धैर्यशील होते हैं। वे शान्तचीत्त होते हैं।

· गुलाम ने दुनिया के बादशाह के बल की हद किस प्रकार दिखलाई ? लगभग 50 शब्दों में उत्तर दीजिए।

उत्तर—गुलाम दिल से आजाद था। बादशाह ने कहा—"मैं तुम्हें अभी जान से मार डालूँगा तुम, क्या कर सकते हो ?" गुलाम बोला—'हाँ, मैं फांसी पर चढ़ जाऊँगा पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूं।" इस तरह गुलाम ने दुनिया के बादशाह को उसके बल की हद दिखा दी।

). निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए—

(1) वीर पुरुष का शरीर कुदरत की कुल ताकतों का भण्डार है। यह मरकज हिल नहीं सकता।

उत्तर—वीर पुरुष का शरीर प्रकृति की शक्तियों का केन्द्र होता है। वह अपनी शक्तियों को फिजूल नहीं होने देता। वीर की नीति बल को इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है। उसके अन्दर जो देवी केन्द्र है वह अचल है। वह अपनी शक्ति को नष्ट नहीं होने देता।

(2) आजकल के वीरों की जानें अखबारों के लेखों में है।

उत्तर—आजकल अखबार वीर पैदा करते हैं। किसी ने एक-दो काम किए और आगे बढ़कर छाती दिखाई कि अखबार उसे हीरो बना देते हैं। ये अखबार ही निन्दा कर उनकी मौत का कारण बनते हैं। वीरों का जीना और मरना आज अखबारों के हाथ है। अखबारों ने स्तुति की तो वीर बन गये और निन्दा की तो उनकी मौत हो गई। अतः लगता है कि वीरों की जानें अखबारों के लेखों में है।

1. जापान के वीरता सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—जापानी लोग वीरता की मूर्ति पूजते हैं। इस मूर्ति के दर्शन वे चेरी के फूल की शान्त हँसी में करते हैं। उनके अनुसार वीरता सदा जोश भरा हुआ ही उपदेश नहीं करती। वीरता कभी-कभी हृदय की कोमलता का भी दर्शन कराती है।

2. "कायर कहते हैं—आगे बढ़ो। वीर कहते हैं पीछे हटो। कायर कहते हैं—उठाओ तलवार। वीर कहते हैं- सिर आगे करो।" इसका आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि आप इससे कहाँ तक सहमत हैं।

उत्तर—इसका आशय यह है कि कायर अपनी शक्तियों को फिजूल खर्च करने को कहता है। वीर अपने अन्दर झाँकता है, अपने को देखता है। वह अपनी आत्मिक उन्नति की बात सोचता है। वह बाहरी उन्नति का विचार नहीं करता। उसका हृदय प्रकृति की कुल शक्तियों का भण्डार होता है। वह इन शक्तियों को व्यर्थ नहीं करता। वह इनको एकत्र करता है। लेखक ने आत्मिक उन्नति करने वालों को सच्चा वीर माना है। अतः उसका यह कथन सारगर्भित है।

13. निम्नांकित पर टिप्पणियाँ लिखिए—

(1) वीरों का दान—वीर रुपया, पैसा, माल, धन का दान नहीं करते। वे तो अपने आपको हवन करते हैं। यही वीरों का दान है।

(2) मंसूर—एक सूफी संत थे। वे कहा करते थे कि मैं खुश हूं। औरंगजेब को यह अच्छा नहीं लगा। उसने उन्हें फाँसी पर लटकवा दिया।

(3) शम्सतबरेज—यह भी एक सूफी संत हुए हैं। औरंगजेब सुन्नी मत को मानने वाला था। अतः बाकी सबको वह काफिर कहा करता था। उसने इस संत की खाल उतरवाई। संत ने उस खाल को बादशाह को भीख में दे दिया।

(4) नेपोलियन—यह फ्राँसीसी सेनापति था। इसने फ्रांस को आजाद करवाया और एक बार तो उसने समस्त यूरोप को ही जीत लिया था। यह असम्भव तो किसी कार्य को मानता ही नहीं था।

(5) महात्मा-बुद्ध—राजा शुद्धोधन के पुत्र। बचपन का नाम सिद्धार्थ। बाद में शान्ति प्राप्ति के बाद महात्मा बुद्ध-कहलाए। बौद्ध धर्म प्रर्वतक बने।

(6) गुरु नानक—सिक्ख धर्म के प्रर्वतक थे।

14. सच्ची वीरता निबन्ध के आधार पर लगभग 200 शब्दों में "वीरता" विषय पर एक निबन्ध की रचना कीजिए।

उत्तर—(नोट—इस उत्तर के लिए पाठ का सारांश पढ़ लें।)

15. सच्ची वीरता निबन्ध के आधार पर सरदार पूर्णसिंह की रचना शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—सरदार पूर्णसिंह द्विवेदी युग के चिर-परिचित निबन्धकार हैं। ावुक, प्रेमी हृदय एवं सच्चरित्रता के सच्चे पुजारी थे। उनका कवि य उनके निबन्धों में छलका पड़ता है। प्रस्तुत निबन्ध इस बात का ण है।

सरदारजी की शैली काव्यमय है। उनके निबन्ध गद्य में कविता कहे सकते हैं। प्रस्तुत निबन्ध में उनका कवि हृदय जैसे मानो छलक पड़ ा हो। निबन्ध की एक-एक पंक्ति कविता की पंक्ति ही मानो। यह बन्ध सरदारजी की भावुकता को प्रकट करने वाला है। इसमें इन्होंने च्ची वीरता को मूर्त्त एवं स्थूल रूप से चित्रित किया है। अमूर्त्त भाव का ा मूर्त्त चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है। अपने कथनों एवं मान्यताओं के प्रमाण सरदारजी, इतिहास से उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। विषय का प्रतिपादन न्होंने इस रूप में किया है कि सच्ची वीरता की मूर्ति सी हमारे मानस में ा विराजती है।

सरदारजी के निबन्धों की भाषा अलंकृत होती है। प्रस्तुत निबन्ध की ाषा भी इसका अपवाद नहीं है। अलंकृत होने पर भी भाषा अति स्वा-ाविक एव सरल है। आपकी वाक्य रचना सुगठित है और भावों का मूर्त-चत्रण करने में सक्षम है। वाक्य ऐसे सुगठित एवं सारगर्भित हैं कि वे कहा-तों से लगते हैं। अन्ततः हम यही कह सकते हैं कि सरदारजी की भाषा ैली उनके व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है।

---

10. पुण्य स्मरण

—महादेवी वर्मा

ाठ का सारांश—

प्रस्तुत लेख में महादेवीजी ने महात्मा गान्धी के सार्वभौमिक व्यक्तित्व को प्रकाशित किया है। उनके व्यक्तित्व की इस सार्वभौमिकता का कारण उनके व्यक्तित्व के शारीरिक एवं चारित्रिक गुण थे।

(i) शारीरिक गठन—गान्धीजी आकृति में सामान्य जन के प्रतिनिधि थे। कुछ कृश, लम्बा और इस्पाती स्नायुजाल से युक्त एवं उज्ज्वल, श्यामवर्ण

देह को देखकर लगता था मानो किसी साँचे में ढली लोह प्रतिमा को ज्वाल से धोकर स्वच्छ कर दिया गया हो। लम्बी बांहें, चौड़ी हथेलियाँ, लम्बी और दृढ गठित उंगलियाँ उनकी अपनी विशेषताएं हैं। पुष्ट घुटने, सूती हुई सी पिंडलियाँ एवं द्रढ़ पांव उनकी दृढता के प्रतीक थे।

क्षीण कटि, कृश उदर, उभरा चौड़ा वक्ष, बड़ा सिर, सीधी नासिक उनके दृढ़ निश्चय के परिचायक थे। कुछ बड़ा सा नीचे का ओठ, आकर्षक आँखें उनकी अन्य विशेषताएं थीं।

(ii) **वेशभूषा**—वे शुभ्र खादी की आजानु आच्छादित धोती पहनते थे ऊपर का भाग नग्न रहता था। पैरों में चप्पल, आंखों पर चश्मा यही उनकी साधारण सी वेश-भूषा थी।

(iii) **व्यक्तित्व के गुण एवं प्रभाव**—गान्धीजी किसी मत या सम्प्रदाय के संस्थापक नहीं थे। उन्होंने किसी वाद या सिद्धान्त-विशेष की उद्भावना नहीं की थी। उन्होंने धर्म के सिद्धान्तों की परीक्षा राजनीति में की और सामाजिक आचार की साहित्य में।

गान्धीजी ने देश की जीवन-शक्ति की क्षीणता के कारण को पहचाना और देश को विदेशी दासता से मुक्त कराया। गान्धीजी दूसरों की महानता में विश्वास करते थे और उससे शक्ति प्राप्त करते थे। उन्होंने अहिंसा और सत्य का जयघोष किया। उन्होंने साधन और साध्य की पवित्रता पर भी जोर दिया।

गान्धीजी ने सत्य, अहिंसा और प्रेम के त्रिगुणात्मक तत्व को पहचाना और उसे अपने कर्म में साकारता दी। यही उनके व्यक्तित्व का जादू है। गान्धीजी सर्वकालीन जीवन के प्रतीक थे।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

1. निम्नांकित शब्दों का संधि-विच्छेद करके संधि का नामोल्लेख करिए—

उत्तर—

पद	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
उद्घोष	उत् + घोष	व्यञ्जन सन्धि
उपरान्त	उपर + अन्त	स्वर (दीर्घ) सन्धि
हासोज्ज्वल	हास + उज्ज्वल	स्वर (गुण) सन्धि
अनायास	अन + आयास	स्वर (दीर्घ) सन्धि
दुर्योग	दुः + योग	विसर्ग सन्धि
दुष्कर	दु + कर	विसर्ग सन्धि

निम्नांकित शब्दों का समास-विग्रह करके समास का नाम बताइए—

उत्तर—

पद	समास-विग्रह	समास का नाम
छोटे-बड़े	छोटे और बड़े	द्वन्द्व
कठघरा	काठ का घर	तत्पुरुष
श्याम-वर्ण	श्याम है वर्ण जो	कर्मधारय
लक्ष्यभेदी	लक्ष्य को भेदने वाला	तत्पुरुष
हासोज्ज्वल	हास जो उज्ज्वल है	कर्मधारय
क्रांत-द्रष्टा	क्रांति का द्रष्टा	तत्पुरुष
भिन्न-भिन्न	भिन्न + भिन्न	अव्ययीभाव
वज्रमुष्टि	वज्र के समान मुष्टि	कर्मधारय

निम्नांकित वाक्यों से उसके संघटक उप वाक्य अलग करके कारण सहित उनके नाम लिखिए—

"प्रकृति सम्भवत: अपने किसी गूढ़ उद्देश्य की सिद्धि के लिए महापुरुषों के मस्तिष्क और हृदय को **जिस सतर्कता से असाधारण बनाती है**, उसी से उसकी आकृति को असाधारणता देती है।

मुख्य वाक्य	उपवाक्य	उपवाक्य का नाम एवं कारण
...कृति उसकी आकृति को ...साधारणता देती है।	अपने किसी गूढ़ सिद्धि के लिए महापुरुषों के मस्तिष्क और हृदय को जिस सतर्कता से असाधारण बनाती है।	विशेषण उपवाक्य मुख्य वाक्य का विशेषण

. निम्नांकित शब्द-युग्मों का अर्थभेद स्पष्ट करिए—

उत्तर—

(i) स्वाभाविक/नैसर्गिक
स्वाभाविक = स्वभाव से या अपने आप होने वाला
नैसर्गिक = प्राकृतिक

(ii) विद्रोह/विप्लव
विद्रोह = बलवा, बगावत, राज्य सत्ता के विरुद्ध होना
विप्लव = क्रान्ति, हलचल, अशान्ति

(iii) आचार/अचार

अचार = फल अथवा तरकारियों में नाना प्रकार के मिर्च-मसाले डालकर बनाया हुआ खाने का पदार्थ

आचार = व्यवहार, आचरण

(iv) अनुभूति/अनुभव

अनुभूति = परिज्ञान, उपलब्धि

अनुभव = प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान

(v) अस्त्र/शस्त्र

अस्त्र = फेंक कर चलाने का हथियार, जैसे बाण।

शस्त्र = हाथ में पकड़ कर वार करने वाले हथियार, जैसे-तलवार।

5. "उज्ज्वल" शब्द आपका साथी "उज्जवल" लिखता है। आप इस त्रुटि का ज्ञान कराने के लिए क्या तर्क देंगे ?

उत्तर—"उज्ज्वल" शब्द में दोनों ज्ज् आधे बोले जाते हैं अतः 'ज्ज्व' लिखना ही सही रहेगा।

6. निम्नांकित का अन्तर 100 शब्दों में समझाइए—

साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, पूंजीवाद, भौतिकवाद।

उत्तर—(1) **साम्राज्यवाद**—यह वह वाद या सिद्धान्त है जिसमें साम्राज्य को बनाये रखने तथा उसको निरन्तर बढ़ाते रहने की अभिलाषा होती है, जैसे अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य को खूब बढ़ाया और उसके बनाये रखने का निरन्तर प्रयास किया।

(2) **उपनिवेशवाद** यह वह वाद या सिद्धान्त है जिसमें एक देश की सरकार अन्य देशों में अपने लोगों को बसाती है उस पर अपना शासन भी जमाती है।

(3) **पूंजीवाद**—पूंजीवाद को अंग्रेजी में कैपिटलिज्म कहते हैं। यह वह वाद या सिद्धान्त है जिसमें पूंजीपतियों का स्थान आर्थिक क्षेत्र में प्रमुख माना जाता है।

(4) **भौतिकवाद**—वह सिद्धान्त जिसमें पदार्थों को ही सब कुछ समझा जाता है तथा जिसमें आत्मा या ईश्वर आदि नहीं माने जाते। इसमें भौतिक सुखों की प्राप्ति को ही प्राथमिकता दी जाती है। "खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ" का जीवन-दर्शन इस सिद्धान्त के अधिक निकट है।

7. निम्नांकित प्रश्नों में से प्रत्येक का उत्तर 50 शब्दों में दीजिये—

(i) गान्धी और लेनिन में लेखिका ने क्या समानता बताई ?

उत्तर—गान्धी और लेनिन दोनों ही आकृति में सामान्य जन के प्रतिनिधि थे। दोनों को ही न तो विशालकाय शरीर मिला था और न असाधारण रूप। दोनों ने ही आर्थिक धरातल पर मानव समानता का उद्घोष किया।

(ii) गान्धीजी के व्यक्तित्व का लोगों पर पड़ने वाला प्रभाव "विविध" क्यों बताया गया है ?

उत्तर—गान्धीजी के व्यक्तित्व का प्रभाव सीमित नहीं था, उनका प्रभाव जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों पर पड़ा था। उन्होंने धर्म, राजनीति, समाज, दर्शन और साहित्य को प्रभावित किया था। इसलिए उनके व्यक्तित्व के प्रभाव को "विविध" बताया गया है।

(iii) गान्धीजी के कान बड़े होने का लेखक ने क्या कारण बताया है ?

उत्तर—मानव के हर्ष-विषाद का कोई भी धीमे से धीमा स्वर अनसुना न रह जाये, इसी से संभवत नियति ने उसके कानों को कुछ बड़ा ही बनाया। साथ ही उनके कान बड़े मस्तक के अनुपात में बड़े होने ही चाहिए थे।

(iv) विश्व के लोक हृदय ने गान्धीजी को अपना क्यों माना ?

उत्तर—गान्धी जी को लोकहृदय ने ही पहचाना क्योंकि वे स्वयं उसी के प्रतिरूप थे। अपना हृदय तो हमारे लिए जीवन है अतः उससे हमारा द्वैत सम्बन्ध नहीं रहता और द्वैत के बिना स्वार्थ के संघर्ष की स्थिति असम्भव है। इसी से विश्व भर के लोक हृदय ने उन्हें अपना माना।

8. "कुछ कृश, लम्बी और इस्पाती स्नायुजाल से घिरी उज्ज्वल श्याम-वर्ण देह को देखकर लगता था मानों किसी साँचे में ढली लोह प्रतिमा को ज्वाला से धोकर स्वच्छ कर दिया गया हो।"
गान्धीजी की देह के लिए आप अपनी कल्पना से कोई अन्य उत्प्रेक्षा दीजिए।
उत्तर—हम कह सकते हैं "मानो किसी स्लेटी संगमरमर की प्रतिमा को धो पोंछ कर स्वच्छ कर दिया गया हो।"

9. निम्नांकित के रेखांकित अंशों का आशय स्पष्ट कीजिए—

(उत्तर सीमा 50 शब्द)

(i) सम्भवत: **सृजन का अक्षय ऋतु जीवन के अर्द्धवृत को भौतिकवाद** घेरने के उपरान्त शेष अर्द्धवृत को अध्यात्म से घेर कर पूर्ण करना चाहता था ।

उत्तर—जीवन एक गोले के समान है। इसका अर्द्धवृत भौतिकता का और दूसरा अध्यात्म का है। लेनिन ने जीवन के अर्द्धवृत को भौतिक वाद से घेरने का प्रयास किया था ।

(ii) प्रकृति भी विकृति के चरम बिन्दु तक पहुंचने के पहले ही अपनी **अज्ञेय शक्ति को पूँजीभूत करने लगती है** ।

उत्तर—प्रकृति अपनी उस शक्ति को जिसके बारे में कोई जानकारी नहीं, संचित करने लगती है ।

(iii) चलते हुए ही नहीं, ठहरते हुए भी **वे चरण चलने वाले की अबाध गति और अपने गंतव्य में उसकी अडिग आस्था** व्यक्त कर देते थे ।

उत्तर- गान्धीजी के चरण ठहरते हुए भी निरन्तर चलते रहने का भाव और गंतव्य में उनकी दृढ़ आस्था के भाव को प्रकट करते थे ।

(iv) उन आँखों में **दुराव-छिपाव के मेघखण्ड न होकर, विश्व का मुक्त विस्तृत आकाश**, रहता था ।

उत्तर—गान्धी जी की आंखों से कहीं भी दुराव-छिपाव की भावना प्रकट नहीं होती थी। उनमें विश्वास का भाव झलकता था ।

(v) किसी ने उसे जादूगर कहकर **अपने और उसके बीच लक्ष्मण रेखा खींच ली** ।

उत्तर---कुछ लोगों ने गान्धीजी को जादूगर माना और इस तरह अपने और उनके बीच अन्तर कर लिया। अर्थात् वे गान्धी और अपने में भिन्नता उत्पन्न कर उनसे दूर रहे ।

11. इस निबन्ध में दो नाम आये हैं—मार्क्स और लेनिन। ये दोनों हमारे युग के विश्वविख्यात महापुरुष हैं। इनकी जीवनी पढ़कर निम्नांकित विषय पर लगभग 200 शब्दों में एक निबन्ध लिखिए—

मार्क्स और लेनिन की आधुनिक युग की देन ।

उत्तर—मार्क्स एवं लेनिन दोनों ही रूसी महान पुरुष थे। इन्होंने साम्यवादी विचारधारा का प्रचार और प्रसार ही नहीं बल्कि इस विचारधारा को जन्म भी दिया था ।

मार्क्स की विचारधारा मार्क्सवाद के नाम से जानी जाती है। उन्होंने
ांकित बातों को प्रतिपादित किया।

(i) **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**—प्रगति द्वन्द्वात्मक है पर उसका स्वरूप
र्थ मूलक है।

(ii) **इतिहास की आर्थिक व्याख्या**—मार्क्स के अनुसार इतिहास की
ख्या शुद्ध पदार्थ वाली भाषा में की जानी चाहिए न कि ईश्वर, उद्देश्य
: अभिप्राय वादी भाषा में।

(iii) **अधिक मूल्य का सिद्धान्त**—मार्क्स ने इसकी परिभाषा करते हुए
ा कि श्रमिक वर्ग द्वारा उत्पन्न किया गया वह मूल्य जो सामाजिक दृष्टि-
ण से उसकी स्थिति के लिए जितना आवश्यक है उससे अधिक हो। पूंजी-
ा द्वारा इसका हड़प लिया जाना एक प्रकार की चोरी है।

(iv) **वर्ग-युद्ध**—मार्क्स का यह विश्वास था कि पूंजी वर्ग अर्थात् धनिक
ग दिन पर दिन अधिकाधिक धनी होते जा रहे हैं और गरीब वर्ग दिन
दिन अधिकाधिक गरीब होता जा रहा है और अन्त में एक ऐसा समय
येगा कि गरीब लोग समाज में जिनका अत्यधिक बहुमत है, धनिक वर्ग को
ट देंगे और एक नये समाज की स्थापना करेंगे।

(v) **सर्वहारा की तानाशाही** मार्क्स का विश्वास है कि जब शक्ति से
जीवादी समाज नष्ट कर दिया जाता है तब कुछ समय के लिए जब तक-
र्ग विहीन समाज की स्थापना की जाती है, तानाशाही की अवधि
हती है।

(vi) **परिवार, धर्म आदि का विलोप**—मार्क्स की मान्यता है कि
यक्तिक परिवार और वैयक्तिक सम्पति का विलोप होगा। विवाह का एक
ात्र आधार होगा—"पारस्परिक-प्रेम"। विवाह का कोई नैतिक, धार्मिक
थवा आर्थिक महत्त्व न होगा। परिवार के साथ-साथ धर्म भी गायब हो
ायेगा। नैतिकता आपेक्षिक होगी।

(vii) **राज्य का श्रमिक विलोप**—प्रारम्भ से ही राज्य एक वर्ग द्वारा
ूसरे वर्ग पर दबाव डालने का साधन रहा है इसलिए साम्यवादी राज्य में
ह धीरे-धीरे समाप्त हो जायगा।

लेनिन ने मार्क्सवाद का शोधन किया। वैसे उन्होंने मार्क्स के सिद्धान्तों
की ही पुष्टि की है। इन दोनों ने विश्व को साम्यवाद की विचारधारा से

परिचित कराया है और पूंजीवाद की सत्ता से विश्व को मुक्त करना चाहा है।

12. इस निबन्ध के आधार पर महादेवी की निबन्ध शैली का वर्णन लगभग 150 शब्दों में कीजिए।

उत्तर—महादेवी मूलतः कवयित्री हैं पर उन्होंने गद्य साहित्य की श्री-वृद्धि में भी काफी योगदान दिया है। इनका कवि हृदय इनकी गद्य रचनाओं में भी फूटे बिना नहीं रहता है। अत कल्पना एवं विलम्ब इनकी गद्य शैली की प्रमुख विशेषताएं हैं। गान्धीजी के शारीरिक गठन का विवरण करने में इन्होंने उत्प्रेक्षा अलंकार का सहज रूप से प्रयोग किया है विषयवस्तु के प्रतिपादन में इन्होंने उपयुक्त तर्कों का प्रयोग किया है। अतः तार्किक विचार विश्लेष इनकी शैली की एक अन्य विशेषता है।

चित्रकला और कथन की मार्मिक वक्रता भी आपकी शैली की अन्य विशेषताएं हैं। प्रस्तुत निबन्ध में भी इन विशेषताओं के दर्शन किये जा सकते हैं।

भाषा की दृष्टि से भी इनके निबन्ध इनके कवि हृदय होने का प्रमाण हैं। भाषा में प्रसाद व माधुर्य गुण है। तत्सम शब्दों की बहुलता है। कहीं कहीं शब्दों के लाक्षणिक प्रयोग के कारण भाषा दुरूहता भी आ गई है। वाक्य भी थोड़े लम्बे हो गये हैं और संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों के अधिक प्रयोग के कारण साधारण पाठक के लिए थोड़ी कठिनाई उपस्थित हो जाती है।

——

11. साहित्य की मेरी पहचान

डा. विद्यानिवास मिश्र

पाठ का सारांश—

प्रस्तुत निबन्ध में मिश्रजी ने "साहित्य क्या है?' के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं।

सर्वप्रथम मिश्र जी ने साहित्य को धूप की तरह बहुरूपी कहा है। जिस तरह धूप के कई रूप होते हैं—पूस की नरम धूप, फागुन-चैत की रूखी व अनमनी, जेठ की धूप झुलसाने वाली, सावन की धूप और क्वार की झुलसाने वाली धूप—उसी तरह साहित्य भी बहुरंगी होता है।

साहित्य कंचन नहीं पर कंचन का पानी है जिस पर चढ़ता है उसी के अनुसार निखार पाता है। साहित्य की पहचान साहित्य को ग्रहण करने वाला चित्र है। वह कुहनी की चोट है जो समूचे प्राण को झनझना देता है।

साहित्य की पहचान है लोक संस्कृति के साथ किये गये अन्याय की पहचान।

लेखक ने आगे कहा है कि वह गूंज जो दम्भ के लोह वर्म भेद कर मज्जा में ग्लानि बनकर उबल पड़ती है, साहित्य की पहचान है। साहित्य एक नदी का बहाव है जो इतिहास के कगारों को ढहाता है। साहित्य एक खौलती हुई कड़ाही है, जिसमें पेरे गये गन्ने का रस पकता है। वह पराई पीर में पंगा होता है। यह पीर ही साहित्य के आस्वाद को बढ़ाती है। गहरी वेदना के बाद साहित्य का आनन्द, आनन्द बन पाता है।

साहित्य का रंग मजीठी राग है, जिसे धोने पर और गहरा और गाढ़ा होता है। साहित्य का भूत भी एक बार चढ़ने पर फिर उतरता नहीं है। यह तो गालिब का इश्क है, आग है, जो लगाये लगती नहीं और लग जाये तो बुझती नहीं।

साहित्य प्रश्नाकुल है। वह मासूम बच्चे की तरह प्रश्न छोड़ता रहता है। वह कुछ जानने के लिए सदैव उत्सुक रहता है।

साहित्य आदमी के अहंकार के गज का गणेश के रूप में पुनरुज्जीवन है। साहित्य की लेखक की पहचान अभी भी अधूरी है। शायद कभी पूरी होगी भी नहीं।

अभ्यास के प्रश्न

1. निम्नांकित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर—

(i) **अस्तित्व**—अणु-परमाणु बम्बों ने सम्पूर्ण मानव जाति के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है।

(ii) **यन्त्रणा**—प्राचीन काल में मालिक अपने गुलामों को भूखे-प्यासे ही नहीं मारते थे वरन् उन्हें शारीरिक **यन्त्रणाएं** भी देते थे।

(iii) **अप्रासंगिक**—हंसी-खुशी और राग-रंग के माहौल में अपने कष्टों का राग छेड़ना अप्रासंगिक होता है।

(iv) **दारुण** गरीबों को धन के अभाव में जो **दारुण** कष्ट उठाने पड़ते हैं उनकी कल्पना करना भी सिहरन उत्पन्न करता है।

(v) **मयस्सर**—भारत में अब भी ऐसे कई लोग हैं जिन्हें दो वक्त की रोटी भी **मयस्सर** नहीं होती।

2. रेखांकित शब्दों की पद-व्याख्या कीजिए—
भैया, तुम्हारा मोह ऐसा लगता है, जैसे कुहनी की चोट।
उत्तर—

(i) भैया—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, सम्बोधन कारक।

(ii) तुम्हारा—पुरुष वाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, पुल्लिग, एकवचन, सम्बन्ध कारक।

(iii) जैसे—सम्बन्ध वाचक अव्यय, मोह का कुहनी की चोट के साथ सम्बन्ध प्रकट करता है।

(iv) चोट—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, सम्बन्ध कारक, कुहनी से सम्बन्ध प्रकट करता है।

3. निम्नांकित वाक्य का उसके संघटक उपवाक्यों में विश्लेषण करके उपवाक्यों के नाम बताइए—

"साहित्य केवल नदी का बहाव नहीं है, वह भी है, क्योंकि वह इतिहास के कगारों को ढहाता है, रास्ते के पत्थरों को रेत बनाता है और देश काल के परे उसको ले जाता है जिसे तोड़ता है और उसको भी जिसे वह बहाव के पानी से, भाषा की संवेदना से जोड़ता है।"

उपवाक्य	नाम
1. साहित्य केवल नदी का बहाव नहीं।	मुख्य वाक्य
2 वह भी है।	समान पदी
3. क्योंकि वह इतिहास के कगारों को ढाहता है।	क्रिया विशेषण उपवाक्य
4. वह रास्ते के पत्थरों को रेत बनाता है।	— ,, —
5. और देश काल के परे उसको ले जाता है।	समान पदी
6. जिसे तोड़ता है।	संज्ञा उपवाक्य
7. और उसको भी जिसे वह पानी से, भाषा की संवेदना से जोड़ता है।	समान पदी

4. इस पाठ में से चार लाक्षणिक प्रयोग वाले विशेषण छाँटकर उनका लक्ष्यार्थ स्पष्ट कीजिए।
नरम = सुहावनी
अनमनी = असुहावनी
ताप = वेदना, कष्ट पीर
कसैला = विषाद पूर्ण